ॐ श्री सत्नाम साक्षी

हिन्दी भाषा में आध्यात्मिक जगत की श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय की अधिकृत मासिक पत्रिका

संस्थापक : सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज



प्रेम प्रकाश संदेश

वर्ष 25 | 15 जनवरी 2006 | अंक 3

वार्षिक शुल्क :- रु. 50 (भारतवर्ष में), रु 500 (विदेश में)

सद्गुरु जिज्ञासु को देते हैं ब्रह्मज्ञान

सद्गुरु टेऊँराम अमृतवाणी

जब मनुष्य को सत्गुरु की प्राप्ति होती है, तब ही वह गूढ़ तत्वज्ञान की बात समझ सकता है कि मैं कौन हूँ. गुरु के यहाँ से ही भगवान का पता मिलता है. गुरु के मिलने से ही संसार के सारे ग़म दूर हो जाते हैं. गुरु के पास श्रद्धा, विश्वास और प्रेम के साथ जाने से ही सब तीर्थों का फल मिलता है. सब कामनाएं पूर्ण होती हैं. सच्चे गुरु के मिलने से जिज्ञासु स्वयं गुरु और भगवान का स्वरूप बन जाता है, जैसे दीपक से दीपक मिलकर वैसा ही प्रकाश करता है. गुरु चार प्रकार के होते हैं.

1. पारस की तरह :– जैसे लोहा पारस से मिलकर सोना बन जाता है, उसी प्रकार जिज्ञासु भी अपने सत्गुरु के संग और सानिध्य में अपना ख़राब स्वभाव मिटाकर, मनुष्य बन जाता है.

2. चन्दन की तरह :– जैसे अगर चन्दन वन के सभी वृक्षों को सुगन्ध देकर चन्दन बना देता है परन्तु दूसरों को स्वयं जैसा अगर चन्दन नहीं बनाएगा, उसी प्रकार सत्गुरु भी जिज्ञासु को भक्ति रूपी सुगन्ध प्रदान कर भक्त बना देते हैं.

3. भृंगी की तरह :– जिस प्रकार भृंगी, कीड़े को शब्द सुनाकर अपने जैसी भृंगी बना देती है, उसी प्रकार सद्गुरु भी जिज्ञासु को उपदेश देकर, अभ्यास कराकर सन्त बना देते हैं.

4. दीपक की तरह :– जैसे एक ही दीपक से हजारों दीपक जलकर एक जैसा ही प्रकाश करते हैं, उसी तरह सद्गुरु भी जिज्ञासुओं को ब्रह्मज्ञान देकर उन्हें ब्रह्म बना देते हैं.

नमः टेऊँरामाय   ॐ श्री सत्‌नाम साक्षी   नमः सर्वानन्दा

जयपुर में

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का 84वाँ चैत्र मेला

11 से 15 अप्रैल 2006 तक

देखो प्रेम आयके, अमरापुर स्थान ।
सन्त समागम पायके, अपना करो कल्यान ।।

कलियुग में प्रधान है, सेवा पुनि सत्संग ।
कह टेऊँ जिसके किए, होवे भव दुःख भंग ।।

समस्त सज्जनों को सूचित करते हुए हर्ष होता है कि सनातन धर्मी श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदायाचार्य योगीर ब्रह्मश्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ श्री 1008 आचार्य सद्‌गुरु टेऊँरामजी महाराज द्वारा स्थापित चैत्र मेला श्री अमरापुर स्थ जयपुर में श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष **सद्‌गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज** की अध्यक्षता में सिन्धी तारी 12 से 16 चैत्र सम्वत् 2062 तदनुसार मंगलवार 11 अप्रैल से शनिवार 15 अप्रैल 2006 तक भव्य हर्षोल्लास मनाया जा रहा है. इस महाब्रह्मयज्ञ में प्रेम प्रकाश मण्डल के सब सन्त एवं सारे भारत वर्ष के सन्त महात्मा, विद्वान, क भगत सद्‌गुरु महाराज के जीवन चरित्र पर प्रकाश डालेंगे. आप सबसे नम्र निवेदन है कि इस महोत्सव में सपरिवार आ अपने मानव जीवन को कृतार्थ करें.

कार्यक्रम

मंगलवार 11 अप्रैल, 2006	स्वामी गुरूमुखदासजी महाराज की 40वीं पुण्यतिथि
बुधवार 12 अप्रैल, 2006	प्रातः 6 से 8 बजे तक सत्संग, 8 से 10 बजे तक हवन एवं ध्वजावंदन सायं 3 बजे शोभायात्रा, 8 से 9 बजे तक सत्संग
गुरुवार 13 अप्रैल, 2006	प्रातः 6 से 11 बजे तक सत्संग,
शुक्रवार 14 अप्रैल, 2006	सायं 3 से 9 बजे तक सत्संग
शनिवार 15 अप्रैल, 2006	प्रातः 4 बजे सत्संग शुरू होगा एवं प्रातः 7 बजे पल्लव पाकर उत्सव का समापन

शोभायात्रा का मार्ग

श्री अमरापुर स्थान से पोलोविक्ट्री, पुलिस लाइन, चांदपोल बाजार, छोटी चौपड़, बड़ी चौपड़, जौहरी बाज सांगानेरी गेट, न्यू गेट, नेहरू बाजार, इन्दिरा बाजार, पांच बत्ती, एम.आई.रोड से पुनः अमरापुर स्थान पर समा

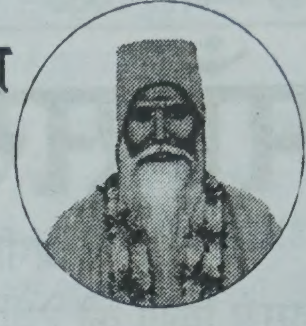
नोट
१. सभी यात्री आवश्यकतानुसार बिस्तर, ताला, टार्च, गिलास जरूर लावें.
२. सोना गहना व कीमती सामान साथ न लावें.
३. कोई भी माता-बहिन अपने पिता, भाई या पुरुष रिश्तेदार इत्यादि के सिवा अकेली न आवें.

सेवा में
प्रेम प्रकाश मण्डल (ट्रस्ट)
अमरापुर स्थान, जयपुर-302001
फोन : 0141-2372423, 24 फैक्स : 2362424
e-mail : amrapur@premprakashpanth.com

पता
सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज
श्री अमरापुर स्थान,
एम. आई. रोड, जयपुर-302001
website : www.premprakashpanth.com

ॐ श्री सत्‌नाम साक्षी

हिन्दी भाषा में आध्यात्मिक जगत की श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय की अधिकृत मासिक पत्रिका



प्रेम प्रकाश संदेश

वर्ष 25 | 15 जनवरी 2006 | अंक 3

सदस्यता शुल्क

अवधि	भारत में	विदेश में
एक वर्ष के लिए-	50 रू.	500 रू.
तीन वर्ष के लिए-	140 रू.	1400 रू.

मूल्य एक प्रति 5 रूपए

जिन भी सदस्यों की शुल्क अवधि समाप्त हो गई हो, या हो रही हो उन्हें मनीआर्डर द्वारा अथवा विभिन्न शहरों में नियुक्त प्रतिनिधियों के पास चंदा जमा करवाकर शीघ्र ही नवीनीकरण करवा लेना चाहिए .

सदस्यता शुल्क भेजने व पत्र-व्यवहार के लिए पता :- व्यवस्थापक :- कार्यालय-प्रेम प्रकाश संदेश, प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ, लश्कर, ग्वालियर-474001

फोन:0751-4045144 सांय 4 से 8 बजे तक,

e-mail-editorpremprakashsandeshgwl@yahoo.com

अनुक्रम

परम पावन गुरू स्थल श्री अमरापुर धाम जयपुर में भी प्रति गुरूवार, रविवार प्रातः ८ से १२ बजे तक व प्रति शनिवार सांय ५ से ८ बजे तक प्रेम प्रकाश संदेश की नयी सदस्यता अथवा नवीनीकरण के लिए प्रेम प्रकाश संदेश काउंटर पर श्री कुमार चंदनानी व श्री नारायणदास रामचंदानी जी के पास शुल्क जमा किया जा सकता है.

माँ सरस्वती वन्दना

२ फरवरी बसन्त पञ्चमी पर वि

बसन्तपञ्चमी पर विद्यार्थियों को प्रात:काल माँ सरस्वती की पूजा–अर्चना कर ये प्रार्थना वन्दना करनी चा जिससे विद्या की देवी का आशीर्वाद प्राप्त होगा. इस दिन माँ सरस्वती देवी की पूजा अर्चना वन्दना करने से विशेष फ विद्या की प्राप्ति होती है. बसंतपञ्चमी पर प्रत्येक विद्यार्थी व साधक को प्रात:काल शीघ्र उठकर माता पिता के चरण स्पर्श माँ सरस्वती की प्रतिमा पूजास्थल पर विराजमान कर फूलमाला अगरबत्ती तिलक आदि से पूजा अर्चना करके यह व पढ़नी चाहिये. इससे स्मरण शक्ति का विकास होकर बुद्धि तीक्ष्ण होगी और ज्ञानकी प्राप्ति होगी. यह वंदना नित्य क सोने में सुहागा.

ॐ नमो शारदा मात् विद्या प्रदेनी,
करो मेध्य मेधा यथा कं त्रवेणी।
करो नष्ट मोहादि शान्त्यादि दीजै,
हरो आपकारी हृदय धाम कीजै।।

ॐ शुक्लां ब्रह्मविचार सार परमाद्यां जगद् व्यापिनिम्,
वीणा पुस्तक धारिणीम् भयदां जाड़यान्ध कारोपहाम्।
हस्ते स्कारिक मालिकां विंदधती पद्मासने सदिथतांम्,
वन्दे तां परमेश्वरी भगवती बुद्धि प्रदां शारदाम्।।

ॐ या कुन्देन्दुतुबार हार धवला या शुभ्रवस्त्रावृता,
या वीणा वरदण्ड मण्डिते करा या श्वेत पद्मासना।
या ब्रह्माच्युत शङ्कर प्रभृतिदेवै सदा वन्दिता,
सा मां पातु सरस्वती भगवती नि:शेष जाड़यापहा।।



बच्चों के लिये यह जागने का समय है

यह प्रभात है. रात का अन्तिम प्रहर समाप्त हो रहा है और प्रभात का प्रथम प्रहर प्रारम्भ हो रहा है. सम्पूर्ण संसार आँखें खोल रहा है. भक्तों के लिये यह भक्ति वेला है. कर्मशील व्यक्तियों के लिये कर्म–वेला है. विद्यार्थियों के लिये यह ज्ञान प्राप्ति की वेला है.

प्रभात की यह वेला सबसे सुदंर है. ज्ञान की प्राप्ति के लिये इससे सुदंर समय तुम्हें और कौनसा मिलेगा? वीणा वादिनी माँ सरस्वती ज्ञान रस का घड़ा उड़ेल रही है. तुम क्यों नहीं प्रात:काल उठकर इन अमूल्य रस की बूँदों से अपने जीवन को सींच लेते? जो विद्यार्थी सोते रहते हैं, ज्ञान की देवी उनकी तरफ देखती भी नहीं? ऐसे विद्यार्थी अज्ञानी रह जाते हैं. प्रात: उठकर अपना लक्ष्य प्राप्त करने में लग जाओ.

संसार में जितने भी मह हुए हैं, वे भोर में ही उठा कर उन्होंने इसी वेला में उठकर संसार को जगाया है. राष्ट्र महात्मा गाँधी प्रभात प्रहर में ही उठते थे. अगर तुम जीव कुछ करना चाहते हो तो समय नष्ट मत करो. सूर्य को बिना प्रतीक्षा किये हुए अकेला ही अपनी मञ्जिल तय करने पड़ा है. उन्नति करने वाले किसीकी प्रतीक्षा नहीं करते.

बच्चों! प्रात:काल की वायु प्राणवायु होती है स्वास्थ्य का भण्डार है. इस वायु को ग्रहण करने से व्यक्ति नहीं होता. सूर्य जब अपनी तेजस्विता बाँट चुका होगा, त उसके सामने जाकर क्या करोगे? बच्चों! इसलिये प्रभा अमृत समय में उठो और सूर्य की तेजस्विता प्राप्त करो.

–संतोष कुमार लोकवानी,

कथा चूड़ाला शिखरध्वज-38

जगत एक भ्रम

रानी चूड़ाला योग कला को साधकर सब जगह पहुंच गयी. व्यक्ति चाहे तो योग कला को साधकर कहीं भी जा सकता है. कई प्रकार की सिद्धियां जो शास्त्रों, ग्रंथो या पुराने इतिहासों में पढ़ने को मिलती हैं वे सब सिद्धियां योग कला से संभव हैं. व्यक्ति जो कुछ करना चाहे वो कर सकता है, असंभव इस संसार में कुछ भी नहीं. कई बार हम ऐसी बातें सुनते हैं तो हमें विश्वास ही नहीं होता कि ऐसा भी होता होगा. परंतु वैसा होता है. रानी भी योग कला को साधके स्वर्गलोक, मृत्युलोक, नरकलोक, पाताललोक सब लोक घूमकर वापिस आई और अंत में सभी तीर्थों पर स्नान करके अपने महल में पहुंच गई. इतना कथा का प्रसङ्ग होके आया है आज के प्रसङ्ग में याज्ञवलक्य मुनि कहते हैं– हे भारद्वाज! मुनि वशिष्ठ कहते हैं– हे रामजी! सत्‌गुरु महाराजजी कहते हैं– हे जिज्ञासुओं! हे मुमुक्षुओं!

ब्रह्माण्ड में भ्रमण

रानी अपने महल में आ गयी.

आत्म–साधना

महामोद से यों कहा, देख लिया सब लोक।
आज काज पूरन भये, मिट गये सगले शोक।।
सब लीला मैं करके आयीं, किसने देखा नाहीं है।
अर्द्ध रात्रि का अवसर है अब, राजा निद्रा माहीं है।।

जान हृदय यों सोय रहीं संग, मन में अति ही हर्ष किया।
रानीं गयीं वा नहीं गयीं ये, राजा ने ना जान लिया।।
प्रातकाल को पति से पहले, उठकर आतम ध्यान धरा।
राजा भी उठ स्नान करके, वेद विधि से कर्म करा।।

रानी को बड़ा आनंद हुआ. जब योग कला को साधकर सारा ब्रह्माण्ड घूमकर आई. **महामोद से यों कहा देख लिया सब लोक।** बड़ा प्रसन्न होकर रानी ने कहा– कि मैंने उन सब लोकों को देख लिया जिन लोकों को देखने की मेरी इच्छा थी. व्यक्ति ने जो चीज नहीं देखी होती है उसे देखने की इच्छा होती है, कोई स्थान नहीं देखा होता है तो उस स्थान पर जाने का मन होता है. रानी ने भी अपने सारे मनइच्छित स्थान देख लिये. उन्हें देखकर प्रसन्नता से भरकर रानी कहने लगी– **आज काज पूरन भये, मिट गये सगले शोक।** मैंने वो सब कर लिया अर्थात् उन सभी चीजों का दर्शन कर लिया जो मुझे देखनी थी और जो कार्य मुझे करना था वो मैंने कर लिया. अब मेरे अंतर के सभी शोक दूर हो गये हैं. और क्या सोचती है रानी–

सब लीला करके आई किसने देखा नाहीं है।

अर्द्धरात्रि का अवसर है, राजा को नींद थी, किसी ने मुझे नहीं देखा कि मैं कहां गयी, कैसे गयी, क्या करके आयी. ऐसा मन में सोचकर कि मेरा सारा कार्य भी हो गया और किसी को पता भी नहीं चला. रानी को बहुत हर्ष हुआ. राजा को तो ये ही पता है कि मैं उसके साथ विश्राम कर रही हूं.

अर्द्धरात्रि का अवसर है, अब राजा निद्रा माहीं है।
जान हृदय यों सोय रहीं, राजा ने ना जान लिया।।

ये सोचकर रानी को बड़ा हर्ष हो रहा है कि राजा को कुछ भी पता नहीं चला. जब व्यक्ति का कार्य पूर्ण हो जाता है तो बड़ा आनंद हो जाता है. रानी ने भी ऐसा ही अचरज देखा. योगकला के द्वारा सभी वो स्थान देखें, जिन जिन स्थानों के बारे में रानी ने कभी सुना था.

रानी गई वा नहीं गई ये, राजा ने ना जान लिया।
प्रातकाल को पति से पहले, उठकर आत्म ध्यान धरा।।

रानी सब कार्य करने के बाद भी अर्थात् रात्रि को योगकला साधी. अर्थात् भगवान से एकाकार होने के पश्चात् भी प्रात:काल पति से पहले उठ गयी.

पत्नी का क्या कर्तव्य है पति से पहले उठना, शिष्य का कर्तव्य है गुरु से पहले उठे. बड़ा कठिन धर्म है ये. गुरु को सुलाने के पश्चात् सोना व गुरु के जागने के पहले जागना. उनकी सारी सेवा करना. ऐसे ही पत्नी का भी धर्म होता है पति से पहले उठना और पति को सुलाने के बाद सोना और पति की सारी सेवा अपने हाथों से करना, ये पतिव्रता स्त्री के लक्षण होते हैं. रानी ने भी अर्द्धरात्रि में इतना सैर किया फिर भी सुबह पति से पहले उठकर आत्मध्यान किया. अर्थात् जो ज्ञान उसे गुरु के द्वारा प्राप्त हुआ था. सर्व प्रथम उसका ध्यान धरा और–

राजा भी उठ स्नान करके, वेद विधि से कर्म करा।

राजा ने भी उठकर स्नान किया और वेद विधि से कार्य करने लगा अर्थात् वेदोंमें वर्णित सुबह उठने के पश्चात् किए जाने वाले कर्म जैसे स्नान करना, दान करना और भी जो नियम हैं उनके अनुसार कार्य करने लगा. और रानी के मन में ऐसा हुआ कि मैं इतना कुछ देख रही हूं, मैंने इतना कुछ जाना है. राजा ने अभी तक कुछ भी नहीं जाना. राजा को अब कुछ न कुछ ज्ञान होना चाहिये. कहीं ऐसा न हो कि जीवन यूं ही चला जाए. तो ऐसा विचार करके रानी ने क्या किया.

निजस्वरूप की पहचान

चलकर रानी तुरत तब, गई नृप के पास।
ज्ञान वचन कहने लगी, सर्व सुखों की रास।।

जैसे सत्गुरु शिष्य को, पिता पुत्र समझाय।
शनै शनै त्यों राव को, रानीं कहत बुझाय।।
पंडित को बुलवाय कहा तुम, राजा को निज बोध दियो।
आप भी रानीं अपने मुख से, आतम का उपदेश कियो।।
यही जगत है कल्पित सारा, सर्प रज्जू जिम भासत है।
ज्यों नर सोया सपना देखा, सीप रजत प्रकाशत है।।
गंधर्व नगर नील गगन ज्यों, मारुस्थल का पानी है।
भरम रूप त्यों जगत स्वरुपा, कहते संत ज्ञानी है।।

पत्नी का कर्तव्य है पति अगर गलत रास्ते पर जा रहा है तो उसे सही रास्ते पर लाना. उसी प्रकार पति का भी कर्तव्य है यदि पत्नी गलत रास्ते पर जा रही है तो उसे गलत रास्ते से रोके. जो कुछ पति को प्राप्त है उसका सुख पत्नी को भी दे. ऐसा ही पत्नी का भी कर्तव्य है.

रानी चूड़ाला विचार करती है कि अपने आत्म स्वरूप को जान करके, उसमें स्थित रहके मुझे बड़ा आनंद मिल रहा है. इतना मैं आनंदित हो रही हूं अपने स्वरूप को पहचानकर परन्तु राजा अभी तक जागा नहीं. अब राजा को धीरे धीरे समझाना चाहिए किसी भी प्रकार से इसको इस आनंदावस्था का बोध कराना ही है. तब रानी विचार करके–

चलकर रानीं तुरत तब गई नृप के पास।
ज्ञान वचन कहने लगीं, सर्व सुखों की रास।।

रानी राजा के पास पहुंचकर सर्व सुखों की खान, सर्व सुखों का भंडार जो आत्मतत्व है, उसके बारे में राजा को समझाने लगी–

सत्गुरु जैसे शिष्य को, पिता पुत्र समझाय।
शनैः शनैः त्यों राव को, रानीं कहत बुझाय।।

जैसे गुरु शिष्य को और पिता पुत्र को समझाता है वैसे रानी धीरे धीरे राजा को समझाने लगी और रानी ने सोचा राजा शायद मेरी बात को पूरा न माने. **पण्डित को बुलवाय कहा तुम राजा को निज बोध दियो।** पंडितों को भी बुलवाया कि आप राजा को ज्ञान दो, ऐसा देखा देखी या सुना सुनाया सामान्य नहीं बल्कि इसे आत्मज्ञान का उपदेश दो जिससे इसके मनमें अपने स्वरुप की जागृति हो और रानी ने आप भी कहा– **आप भी रानीं अपने मुखसे आत्मका उपदेश दियो।** और रानी स्वयं भी ज्ञानवान थी उसने भी राजा को आत्मा का उपदेश किया. क्या उपदेश किया, गुरु महाराजजी बताते हैं. **यहीं जगत है कल्पित सारा, सर्प रज्जू जिमि भासत है।**

हे राजन् ये सारा जगत कल्पित है, देखने मात्र का है, इसको पकड़ नहीं पायेगें. सारा पसारा ये फुरने का ही है. सारा जगत कल्पना का है देखने में आता है पर है नहीं. सिनेमा और मदारी के खेल की भांति है. सभी चीजें नजर आती हैं पर है नहीं इसी प्रकार ये सारा संसार देखने में आ रहा है पर है अर्थात् इसकी सत्ता नहीं है. निरन्तर यह बदल रहा है. **सर्प जिमि भासत है।** जैसे मार्गमें अंधेरा हो थोड़ा और रस्सी पड़ी हो तो वह सर्पकी भांति भासती है तो ऐसा लगता है कि सांप पड़ा है. इसी प्रकार ये संसार भी अज्ञान रूपी अंधे कारण सत्य भासता है परंतु जब ज्ञान का प्रकाश होता है त संसार की असत्यता साफ प्रकाशित हो जाती है. है ही न संसार पर हमारी कल्पनाओं के कारण इसमें हमें सत्यकी प्र होती है. और– **ज्यों नर सोया सपना देखे, सीप रजत प्रक है।**

जैसे कोई व्यक्ति अगर सोये हुए में सपना देख तो उसके उठते ही सपना नाश हो जाता है कुछ बचता ही गुरु महाराजजी फरमाते थे– एक लड़के ने रात को सपना उठकर बड़ा प्रसन्न हुआ. अपने पिता को कहने लगा– पित मैंने बड़ा अच्छा सपना देखा है. क्या सपना देखा कि मेरी हजार की लाटरी निकली है. पिता बोला– बेवकूफ! क कम उन्हें बैंक में तो जमा करवा देता, उठने पर बैंक में त पैसा पड़ा रहता. पुत्र बोला– पिताजी! जब दस हजार गु गये तो बैंक भी गुम हो जाती न! अर्थात् सपने में से उठ जिस प्रकार सपने की सारी वस्तुएं गुम हो जाती हैं उसी जब आत्मज्ञान हो जाता है, ज्ञान की पराकाष्ठा पर व्यक्ति जाता है तब इस जगत की सत्यता स्वतः ही गुम हो जाती है

सीप रजत प्रकाशत है। जैसे सीपी में चांदी की प्र होती है. सीप के ऊपर सूर्य का प्रकाश पड़ता है तो चमक सीप. कैसे चमकती है, जैसे चांदी. दूर से अगर हम चमकत सीप को देखें तो हमें चांदी की भांति नजर आती है. ऐसे संसार असत् है पर मेरा तेरा मैं तू सम्बन्ध व्यवहार के कारण ये सत्य लगता है. परन्तु जिस सत्ता पर यह जगत टिका हु वो सत्ता नजर नहीं आती. अर्थात् जगत जो है नहीं वह आता है और आत्मतत्व जिसकी सत्ता से सब चलता है नजर नहीं आता. अर्थात् जो है नहीं वो नजर आता है औ है वो नजर नहीं आता है.

गंधर्व नगर नील गगन ज्यों, मारुस्थल का पानी है।

यह संसार गंधर्व नगर है, ख्याली पुलाव है आकाश में नगर बसा हुआ है, हो सकता है ऐसा या जै नील गगन हमें नीला दिखाई देता है, पर हकीकत में यह नहीं है. आकाश बहुत गहरा है इसीलिये हमें आकाश को पर उसमें नीलापन दिखाई देता है. अर्थात् ये हमारा दृष्टि भ्र वैसे ही जैसे मरुस्थल का पानी है. दिनके समय रेत पर सूर्य किरणें पड़ने से दूर से देखने पर ऐसे लगता है जैसे पानी है, बह रही है. अब कितना ही उस पानी को प्राप्त करने कोशिश करें वो मिलता नहीं क्योंकि वो वास्तव में है ही

से ही–

भरमरुप त्यों जगत स्वरूपा, कहते संत ज्ञानीं हैं।

गुरु महाराजजी फरमाते थे एक राजा और एक वजीर शिकार करने गये. शिकार खेलते खेलते राजा और वजीर बहुत दूर निकल गये. दिन का समय था राज़ा वजीर से कहता है– बड़ी प्यास लगी है. वजीर ने कहा– महाराज मैं अभी पानी की व्यवस्था करता हूं. सामने रेत थी, उस पर सूर्य का प्रकाश पड़ रहा था, ऐसा लग रहा था मानो नदी बह रही है. राजा ने वजीर से कहा– सामने देखो. नदी बह रही है. पानी भरकर ले आओ. वजीर ने कहा– महाराज! अभी पानी भरके लाता हूं. सामने ही तो नदी है. वजीर चलता गया चलता गया पर उसे नदी नहीं मिली, होवे तो नजर आवे.

आखिरकार वजीर को एक यात्री मिला उससे कहता है वजीर. भाई! मुझे पानी भरके ला दो. यात्री ने कहा यहां पानी नहीं है. वजीर ने कहा– है. यात्री ने कहा– महाराज! मरुस्थल में पानी कहांसे आया? यहां पर पानी है ही नहीं. वजीर उसे पकड़कर राजा के पास ले आया. आकर राजा से कहा– महाराज! ये देखिए हमारे देश के निर्दयी आदमी! आपको पानी की जरूरत है. यह पानी नहीं लाता.

राजा कहता है– भाई! तू तो बड़ा निर्दयी है. मुझे पानी की जरूरत है, सामने नदी बहती है और आप मेरे लिये पानी नहीं लेकर आते. बोला– जाओ! जाकर पानी भरके लाओ. जाओ वजीर के साथ. अब वजीर और यात्री दोनों साथ जा रहे हैं. वजीर के मन में है कि पानी मिलेगा परन्तु उस यात्री के मन में है पानी नहीं मिलेगा. है ही नहीं तो मिलेगा कहां से.

ऐसे ही जो अज्ञानी पुरुष है उनके मन में है कि ये संसार सुखरूप है, सुख मिलेगा इससे और जो ज्ञानी है वह सोचता है कि संसार है ही नहीं. इतना ही फर्क है ज्ञानी और अज्ञानी की दृष्टि में. रानी भी राजा को यही समझाते हुए कहती है– **भरमरुप त्यों जगत स्वरूपा, ज्ञानी संत सुनाते हैं।**

ऐसे ही ये जगत भी भ्रमरूप है, ऐसा ही ज्ञानी संत बताते हैं. **यह जग दीर्ध रोग उसीमें, जींव रैन दिन रोवत है।** यह जग रोग है, नासूर का रोग है. इसी नासूर रोग में फंसकर लोग दिन रात रोते रहते हैं. और **ब्रह्मज्ञान इक इनकी औषधि, सर्व रोग को खोवत है।** इस रोग से निवृत्ति की एक ही औषधि है. ब्रह्मज्ञान! इसी आत्मज्ञान से इस जगत का निवारण हो सकता है क्योंकि इस जगत की निवृत्ति ज्ञानी के सिवाय नहीं हो सकती. ज़ब ज्ञान होगा तो जगत में जो जगत की आसक्ति है, जो सत्पना है जगत में वो हमारा नाश हो जाएगा.

राजा को रानी और पंडित मिलकर राजा को जगत के मिथ्यात्व का भान करा रहे हैं. ये जो चार वचन सुने हैं, उनका विचार करना. विचार में ही आनन्द है.

एकादशी कैसे करें

एकादशी व्रत का प्रारम्भ किसी भी एकादशी से किया जा सकता है. इसके लिये उत्पन्ना एकादशी की प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं है. कोई भी शुभ कार्य जितनी जल्दी हो सके प्रारम्भ कर देना चाहिये.

एकादशी के दिन अन्न का आहार करना निषिद्ध है, विशेषकर चावल तो नहीं ही खाना चाहिए.

एकादशी का व्रत कई प्रकार से किया जाता है. सर्वोत्तम विधि निर्जल व्रत का है. परन्तु इसका गृहस्थ तथा सौभाग्यवती पुत्रवती स्त्री के लिए निषेध वचन भी है. यदि कोई करना चाहे तो तुलसीदल तथा भगवान् का चरणामृत लेने से इस दोष का परिहार हो जाता है. कोई निर्जल व्रत न करे तो एक बार दूध, ठंडाई, बेल अथवा नींबू आदि का शरबत या अन्य कोई फलाहारी पेय पदार्थ लेकर व्रत कर सकते हैं. इसके बाद एक बार फलाहार, फल, दूध लेकर व्रत किया जा सकता है. इससे भी संतुष्टि न हो तो कुटू अथवा सिंघाड़ा आदि की रोटी या पुड़ी, रामदाना, छेना, खोवा, आलू, शकरकंद तथा अन्य फलाहारी सामान का प्रयोग व्रत में किया जा सकता है. केवल एक बार फलाहार करने से व्रत पूरा होता है. दूसरी बार फल दूध लेने से व्रत पूर्ण नहीं होगा. केवल एकादशी के दिन अन्न खाने के दोष से बच सकते हैं.

जो लोग एक बार फलाहार कर व्रत करने में सक्षम ना हों तो उन्हें कम से कम एकादशी के दिन अन्न तो नहीं ही खाना चाहिए. यदि किसी कारणवश बीच में एकादशी का व्रत न कर सके तो कम से कम एकादशी के दिन अन्न तो नहीं ही खाना चाहिए.

प्रत्येक एकादशी के लिए कोई अलग से विशेष व्यवस्था नहीं है. सभी एकादशियों में ऊपर लिखे आहार लिये जा सकते हैं. **प्रायः कई बार एकादशी दो दिन भी हो जाती है. पहले दिन की एकादशी स्मार्तानाम् अर्थात् गृहस्थों के लिए तथा दूसरे दिन की एकादशी वैष्णवनाम् अर्थात् साधुजनों के लिये है. आप साधक गृहस्थ लोग पहले दिन की एकादशी कर सकते हैं.**

– साभार कल्याण

भाग-4
सद्गुरु टेऊँराम दोहावली

२८. दोहा: **जैसे पय में धृत है, तैसे हरि उर माहिं।**
कह टेऊँ सतगुरु बिना, देख सके को नाहिं।।

भावार्थः जैसे दूध के भीतर घी विद्यमान रहता है. उसे दही के रूप में जमाकर उस दूध से घी प्राप्त करते हैं. वह घी जो अव्यक्त था व्यक्त हो जाता है. सद्गुरु टेऊँरामजी कहते हैं कि उसी प्रकार सद्गुरु की कृपा से हमारे अन्तःकरण में विराजमान हरि को हम व्यक्त अवस्था में देख सकते हैं.

२९. दोहा: **जिस सुखको तुम चाहते, सो सुख है तुझ माहिं।**
कह टेऊँ गुरुदेव बिन, तोहि मिले कब नाहिं।।

भावार्थः इस संसार में हम जिस सुख की खोज करते हैं. वह सुख हमारे अन्दरही स्थित है. स्वामी टेऊँरामजी कहते हैं कि बिना गुरुदेव की कृपा के वह सुख हमें नहीं मिल सकता. अतः सुख की प्राप्ति गुरु कृपा बिना संभव नहीं है.

३०. दोहा: **गुरु की वाणी वेद सम, पढ़े सुने जन जोय।**
कह टेऊँ संशय हरे, सुख को पावत सोय।।

भावार्थः गुरु के मुख से निकली वाणी और शिक्षाऐं वेदोक्त वाणी के तुल्य पवित्र एवं निर्मल हैं. स्वामी टेऊँरामजी कहते हैं कि जो व्यक्ति गुरु की वाणी श्रद्धापूर्वक सुनता है उसके सभी संदेह दूर हो जाते हैं और वह सब प्रकार से सुख प्राप्त करता है.

३१. दोहा: **सत्गुरु की कृपा बिना सरे न कोई काज।**
तांते गुरु की शरन ले कह टेऊँ तज लाज।।

भावार्थः सत्गुरुजी की कृपा के बिना कोई भी कार्य सिद्ध नहीं हो सकता है. इसलिये गुरु की शरण ग्रहण करनी चाहिये. इस प्रकार शरण ग्रहण करने में किसी प्रकार की कोई लज्जा नहीं है. स्वामी टेऊँरामजी कहते हैं कि सब लज्जा का त्याग कर गुरु की शरण लेने में ही सिद्धी है.

३२. दोहा: **सत्गुरु की कृपा बिना भव सिन्ध तरे न कोय।**
कह टेऊँ गुरु शरन ले जे भव तरना होय।।

भावार्थः सत्गुरु जी के अनुग्रह के बिना कोई भी संसार सागर को पार नहीं कर सकता. यह भव–सागर बहुत गंभीर है यदि इसे पार करना है तो गुरु महाराज की शरण ले अतः स्वामी टेऊँरामजी कहते हैं कि भव सागर से पार ह ही मानव का लक्ष्य है.

३३. दोहा: **पूरन आतम ज्ञान दे, काटे जो दुख द्वन्द।**
ऐसे गुरु को करत हूँ, कह टेऊँ नित वंद।।

भावार्थः गुरुजी पूर्ण आत्मज्ञान कराते हैं. वे शिष्य के सम दुःखों और द्वन्दो को काट देते हैं. स्वामी टेऊँरामजी महा कहते हैं कि ऐसे गुरु को नित्य वंदना करता हूँ.

३४. दोहा: **पूरन गुरु के वचन में, पूरन जिहँ विश्वास**
कह टेऊँ तिस दास को, होवे ज्ञान प्रकाश।

भावार्थः सिद्ध गुरुजी के वचनों और उपदेशोंमें जिस शि का पूर्ण विश्वास है वह शिष्य धन्य है. स्वामी टेऊँरा कहते हैं कि ऐसे शिष्य को ही पूर्ण ज्ञान का प्रकाश होत ज्ञान प्राप्ति के लिये गुरुमें पूर्ण विश्वास परम आवश्यक

३५. दोहा: **रागद्वेष जिसको नहीं, काम क्रोध अहंकार।**
सत्गुरु सो पहचानिये, कह टेऊँ निर्धार।।

भावार्थः जिसमें राग–द्वेष, काम, क्रोध और अहंकार नह वही सच्चा और सिद्ध गुरु होता है. यही सच्चे गुरु पहचान है ऐसा स्वामी श्री टेऊँरामजी महाराज का मत है

३६. दोहा: **सत्गुरु ऐसा कीजिये, तम अज्ञान मिटाय**
कह टेऊँ उर में सदा, अनुभव ज्योति जगाय

भावार्थः स्वामी श्री टेऊँरामजी महाराज का विचार है कि ऐसे व्यक्तिको बनाइये जो उर (हृदय) में स्थित अज्ञान अन्धकार को मिटा दे और हृदय में आत्मज्ञान और साक्षात्कार के अनुभव की ज्योति जगा दे.

३७. दोहा: **सत्गुरु साँचा जान सो, जो मेटे जम त्रास**
तन मन तांको दीजिये, कह टेऊँ हो दास।

भावार्थः स्वामी टेऊँरामजी कहते हैं कि जो यम की (भय) को समाप्त कर दे जो परमात्मा में मन लगवा दे, सच्चा गुरु है. ऐसे गुरु जी को अपना तन मन अर्पण देना चाहिये और उनका दास बन जाना चाहिये.

३८. दोहा: **जैसे नौका काठ की, करत सिंधु से पार।**
कह टेऊँ ज्ञानी गुरु, त्यों तारत संसार।।

भावार्थः स्वामी टेऊँरामजी कहते हैं कि जैसे लकड़ी से हुई नौका तैर सकती है और सागर पार कर सकती है. प्रकार ज्ञानी गुरु भी शिष्य को भव सागर से पार करा दे अर्थात् गुरु का समर्थ होना भी आवश्यक है.

बाबा टेऊँराम का अमोघ महामंत्र सत्‌नाम साक्षी

गुरुभाई आपस में जब कभी भी मिले तो सत्‌नाम साक्षी कहकर ही एक-दूसरे से मिलें. जिससे पता चलता है कि ये प्रेम प्रकाशी सांई टेऊँराम बाबा का भक्त है. ये प्रणाम स्वरूप महामंत्र है.

अनादि काल से चली आ रही सनातन संस्कृति के नुसार गुरु शिष्य की परम्परा! जिससे शिष्य अपने आत्मोद्धार लिये पूर्ण श्रद्धा भाव से गुरु की शरण जाकर गुरुमंत्र की क्षा प्राप्त करता है. गुरुमंत्र का चिन्तन कर प्रभु आराधना से पने चित्त को परमात्म से जोड़ता है. साथ ही अपने जीवन को ाध्यात्मिक पथ पर ले जाकर जीवन को बदलता है.

हर व्यक्ति अपने इष्टानुसार ॐ नमः शिवाय, ॐ नमः गवंते वासुदेवायः, गायत्री मंत्र आदि सिद्ध मंत्रका जाप करके पने जीवन को सार्थक बनाने का प्रयास करता है. परम ोगीश्वर मङ्गलमूर्ति सद्‌गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज द्वारा दिया या कल्याणकारी महामंत्र है ॐ श्री सत्‌नाम साक्षी! वेदों के दृश महामंत्र है सत्‌नाम साक्षी! जिसका जाप करने से मनुष्य इ संसार सागर को सहजता से ही पार कर जाता है **गुरु नाम ी नाव चवाय दिया** इस नाम रूपी नोका में बैठने वाले अवश्य भवसागर से पार हो जाते हैं.

इस महामंत्र का अर्थ भी बड़ा सरल है. गीता वेद ान के अनुसार **नासतो विद्यते भावो न भावो विद्यते सत** सका कभी नाश नहीं होता, जो सदैव सत और अजर अमर . जो सभी जीव चराचर शक्ति मे विद्यमान है. अलौकिक है, चेतन है, निर्गुण निराकार है, सत्‌चित आनंद स्वरुप है वह ाक्षी चेतन की ज्योति प्रकाशित है. सत्‌नाम साक्षी त्रिगुण म्पत्र इस महामंत्रका प्रकाश भी सर्वत्र विद्यमान है. तीन पदों से ुक्त **सत** परमात्मा का नाम सदैव सत है वह अजन्मा है सर्वत्र यापक है. **नाम** परमात्मा द्वारा रचित सृष्टि में नामरूप सत्य है. नको विभिन्न नामों से जाना जाता है. अग्नि, जल, वायु, ाकाश, पृथ्वी से सभी पञ्चमहाभूत उस प्रभु परमात्मा की ही त्ता है. **साक्षी** सूर्य, चन्द्रमा, सितारे, गृह, नक्षत्र में सभी साक्षी . उस प्रभु की अखण्ड सत्ता का आभास करवाते हैं. **साक्षी तन रम रहा, जल थल पुनि आकाश** सभी परमात्माकी सत्ता है ही सत्‌नाम साक्षी ब्रह्मस्वरूप है.

सत तो सत है नाम निरोगी, साक्षी चिद आकार।
ब्रह्म स्वरूपी सत्‌नाम साक्षी, सब जग का आधार।।
सत्‌नाम साक्षी का मंत्र है, बन्धन काटन हार।
दया करे गुरु देवे जिसको, तिसका होय उद्धार।।

यह गुरुदेव का बीजक महामंत्र है. जैसे नन्हे बीज से ृक्ष की उत्पत्ति हो जाती है वैसे गुरुमंत्र के निरंतर अभ्यास से अज्ञान का पर्दा दूर होकर ज्ञान का प्रकाश हो जाता है. साथ ही जीव परम सत्ता को पहचानकर स्वयं सत स्वरूप बन जाता है.

गुरु के द्वारा दिया गया मंत्र सगुण साकार व प्रणाम स्वरुप होता है. इसका निरन्तर जाप करना प्रत्येक शिष्य का परम कर्तव्य है. गुरुभाई अर्थात् शिष्य जब आपस में मिलें तो सत्‌नाम साक्षी कहकर ही एक दूसरे से मिलें. जिससे पता चलता है कि ये प्रेमप्रकाशी सांई टेऊँराम बाबा का सच्चा भक्त है. हर प्रेमप्रकाशी भक्त का कर्तव्य है गुरु के नाम को उजागर करे. चिट्ठीयां–पत्र, फोटो–मूतियां, बहीखाते, शादीकार्ड, अभ्यास पुस्तिका एवं सभी मङ्गल कार्यो के निमंत्रण पत्र पर सत्‌नाम साक्षी महामंत्र का सर्वप्रथम लेखन करना भी गुरुभक्ति है. शास्रानुसार गुरुभक्ति ही सर्वोत्तम भक्ति है. गुरुमंत्र का अपमान या निरादर जीवन में कभी नहीं करना चाहिये. जीवों को धर्म–कर्म, मान–मर्यादा व परमात्मा के मार्ग पर प्रेरित करने के लिये गुरुमंत्र अमृत के समान है.

सत्‌नाम साखी मिठो आहे माखी।
जग्यासी नित जपियो प्रेम प्रकाशी।।
सत्‌नाम साक्षी मन्तरि दे्ई, सत्‌गुर तारिया पापी केई।
जहिंजो दीन दयालु नाम आ।।

गुरु द्वारा प्रदत्त महामंत्र सत्‌नाम साक्षी को अपना आधार बिन्दु बना लो, फिर किसी भी प्रकार का दुःख–दर्द नहीं होगा. गुरुमंत्र के प्रभाव को ध्यान में रखकर जीवन में हर व्यक्ति प्रतिदिन २४ घन्टे में २१६०० बार(इक्कीस हजार छः सौ) श्वास लेता है. श्वासके आधार पर दिनमें व्यक्ति कितनी बार परमात्मा का चिन्तन करता है. विचार करना?

प्रत्येक साधक को अपनी श्वांस–श्वांस में सत्‌नाम साक्षी महामंत्र को धारण करना चाहिये. और यह निरन्तर अभ्यास से बिल्कुल संभव है. अगर अधिक न हो सके तो एक माला का नित्य जाप तो बिल्कुल भी कठिन नहीं है. इसकी एक माला का जाप अर्थात् १०८ बार भी नित्य सत्‌नाम साक्षी महामंत्र का श्रद्धापूर्वक जप कर लिया, समझो २१६०० श्वांसो का फल इससे सिद्ध हो जाता है.

हर शनिवार व गुरुवार की शाम तो बाबा टेऊँराम दरबार(श्री अमरापुर दरबार) के नाम करके सत्‌नाम साक्षी महामंत्र का जाप गुरुदरबार पर ही करें. इससे हमें परम सुख शान्ति की प्राप्ति अवश्यमेव होगी. सत्‌नाम साक्षी को अपने ऊपर गवाही देने वाला गवाह समझो. –साधक, अमरापुर, जयपुर

सास बहू की लड़ाई मिटाने वाला विलक्षण ताबी

(श्रद्धेय स्वामी रामसुखदासजी महाराज)

एक महात्मा थे।वे पैदल घूम–घूमकर सत्संग का प्रचार किया करते थे. वे एक गाँवमें जाते, कुछ दिन ठहर कर सत्संग करते और फिर वहाँसे दूसरे गाँव चल देते. लोग भी उन पर बड़ी श्रद्धा रखते थे और उनकी बात मानते थे. घूमते घूमते वे एक गाँवमें पहुँचे. गाँवमें सब जगह प्रचार हो गया कि महाराजजी पधारे हैं, आज अमुक जगह सत्संग होगा. सत्संगके समय बहुतसे भक्त इकट्ठे हुए. जब सत्संग पूरा हुआ, तब एक माताजी महाराजजी के पास आकर बोलीं– महाराजजी! आप अमुक गाँवमें जाया करते हो.

महाराजजी– हाँ माई, जाया करता हूं.

माताजी– वहाँ आपका अमुक सेवक है. आप उनके घर भी जाया करते हो.

महाराजजी– हाँ, जाया करता हूँ.

माताजी– यह मेरी बहू उसीकी बेटी है. यह मेरे से लड़ती है. मेरा कहना नहीं मानती है.

लोगोंमें महाराजजीका एक भय था. कोई गड़बड़ी करता तो कहते कि हम महाराजजीसे कह देंगे. वह कहता कि भाई, महाराजजी को मत कहना, तुम जैसा कहोगे, वैसा हम करेंगे. महाराजजी कोई राजाकी तरह दण्ड नहीं देते थे. वे बड़े प्रेमसे कहते थे कि भाई, तुम ऐसा क्यों करते हो? लोग उनकी बातका आदर करते थे. प्रेमका जो शासन होता है, वह बड़ा विलक्षण होता है. राजाका शासन तो राजसी तामसी होता है, पर संतोंका शासन सात्त्विक होता है.

महाराजजीने उस माताजीकी बहू को बुलाया और उससे कहा कि बेटी! तू साससे क्यों लड़ती है? महाराजजी ने ऐसा कहा तो उसकी आँखोंसे झर–झर आँसू बहने लग गये! वह जब छोटी बच्ची थी, तब वह महाराजजीके सामने खेला करती थी. अब बड़ी हो गयी, विवाह हो गया तो ससुरालमें आ गयी. उसके मनमें महाराजजीके प्रति बाप दादे की तरह पूज्यभाव था. अब उसने महाराजजी के सामने अपनी शिकायत सुनी तो वह घबरा गयी और रोने लग गयी. महाराजजीने आश्वासन दिया तो वह बोली– महाराज जी! मैंने कोई कसूर तो किया नहीं. मैं सासको दु:ख नहीं देती हूं, फिर भी उनको मेरा काम पसन्द नहीं आता. मैं क्या करूँ? सास बिना कारण मेरेसे लड़ती है.

बहू तो कहती है कि सास लड़ती है और सास है कि बहू लड़ती है. लड़ाई कमसे कम दो आदमियों में हो अकेले में लड़ाई नहीं होती. सैकड़ों–हजारों आदमी मि लड़ाई कर सकते हैं, पर अकेला आदमी लड़ाई नह सकता. दो आदमी लड़ते हैं तो एक कहता है कि वह करता है और दूसरा कहता है कि वह लड़ाई करता है. अवगुण अपनेको नहीं दीखता.

महाराजजी ने कहा– बेटी! तू घबरा मत. मैं एक यंत्र बनाकर देता हूँ, जिससे लड़ाई मिट जायगी. वहाँ देवर खड़ा था. उसको महाराजजीने कागज, कलम, दवा एक ताबीज लानेके लिये कहा. वह जाकर चारों ची आया. महाराजजीने कागजके एक टुकड़े पर कुछ लिख और उसको समेटकर ताबीजमें बंद कर दिया.

महाराजजी– बेटी! यह ताबीज तू बाँध ले. की लड़ाई मिट जायगी. परंतु इसके साथ तेरेको मेरी बात पड़ेगी.

बहू– हाँ महाराजजी! आप जैसा कहोगे, वै करूँगी.

महाराजजी– दो बातें हैं. एकतो सास कोई बा तो सामने मत बोलना और दूसरा, सास जो काम कहे उठकर कर देना. इन दो बातोंका तू पालन कर लेगी तो य सिद्ध हो जायगा.

बहू– महाराजजी! कितना दिन करना पड़ेगा?

महाराजजी– कम से कम बारह महीने पाल लिया तो सब काम ठीक हो जायगा. पर बीचमें कभी भ गयी तो उसी दिनसे फिर बारह महीने गिने जायँगे. उससे जो दिन बीते, वे गिनती में नहीं आयेंगे.

बहू–ठीक है, आप जैसा कहतेहैं, वैसाही करूं

बहूने ताबीज लेकर बाँध लिया. महाराजजी पाँच दिन और सत्संग किया, फिर दूसरे गाँवमें चले गये. कोई नियम नहीं था कि इतने दिन यहाँ रुकेंगे. हमारे यहाँ ऐसे संतोंकी परम्परा चलती थी और लोगों पर उनका शासन चलता था. उनके शासनसे लोग प्रभावित होते थे उन संतोंको बड़े पूज्यभावसे देखते थे और उनकी अ पालन करते थे. इससे गाँवों में बड़ी शान्ति रहती थी.

बहू महाराजजीके बताये नियमोंका पालन करने लगी. सास कोई काम कहती तो वह चट हाथ जोड़कर हाजिर हो जाती थी और सामने नहीं बोलती थी. सासने मन में विचार किया कि महाराजजी का यंत्र बड़ा विलक्षण है. देखो, एक दिनमें बहू सुधर गयी! घरमें बड़ी शान्ति हो गयी. घरवाले भी सब राजी हो गये. सास–बहू आपसमें प्रेमसे रहने लगीं. बहू आज्ञा माने तो वह सासको बेटीसे भी अधिक प्यारी लगती है; क्योंकि बेटी तो थोड़े दिन घर पर रहती है, फिर अपने घर चली जातीहै, पर बहू तो सदा पास में रहती है. खटपट तो तब होती है, जब वह सास के सामने बोल दे और उसका कहना नहीं करे.

कुछ दिनोंके बाद महाराजजी फिर आये तो उन्होंने पूछा–माताजी! ठीक है न? वह बोली– महाराजजी! आपकी कृपासे बहुत ठीक है. बहू सुधर गयी है. बहूसे पूछा तो वह बोली– महाराजजी! एक दिन मेरेसे गलती हो गयी, मैं सासके सामने बोल गयी!

महाराजजी ने कहा– बेटी! उसी दिनसे बारह महीने गिने जायँगे, पहले वाले दिन गिनती में नहीं आयेंगे. एकादशीके दिन अन्नका एक दाना भी खा लें तो व्रत भंग हो जाता है.

बहू बोली– ठीक है महाराजजी! अब मैं ध्यान रखूँगी. इस तरह डेढ़–दो वर्षोंमे उसके बारह महीने पूरे हो गये. सास–बहू में परस्पर बड़ा प्रेम हो गया.

दो ढाई वर्ष बीतने पर महाराजजी फिर उस गाँवमें आये और उनसे बोले कि एक दिन हम तुम्हारे घर भिक्षा करेंगे. वे बहुत राजी हुए. महाराजजी बड़े त्यागी संत थे. वे दो–चार घरोंसे भिक्षा लेकर खाते थे. कपड़े फट जाते थे तो कोई ज्यादा आग्रह करता तो कपड़ा ले लेते थे. रुपयों पैसों का कोई काम ही नहीं था. जब वे उनके घर भिक्षाके लिये गये तो बहुतसे लोग इकट्ठा हो गये कि महाराजजी आये हैं, सत्संग सुनायेंगे. महाराजजीने भिक्षा की और सत्संग सुनाया. फिर कहा कि दूसरे घरोंके जो लोग आये हैं, उनको भेज दो. केवल आपके घरवाले ही रहें, आपसे एक बात कहनी है. घरवालोंने हाथ जोड़कर सबसे कह दिया कि भाई अब सत्संग खत्म हो गया, अब आप सब लोग जाओ. सब लोग चले गये. घरवाले महाराजजीके पास आकर बैठ गये.

महाराजजी बोले कि मैंने जो ताबीज बनाकर दी थी, उसको लाओ. उन्होंने ताबीज लाकर महाराजजी के सामने रख दी. महाराजजी ने कहा कि इसको खोलकर पढ़ो, इसमें क्या लिखा है? उन्होंने ताबीज के भीतर रखा कागज खोलकर पढ़ा. उसमें लिखा था–

सास–बहू राजी तो साधुको क्या और सास–बहू नाराज तो साधुको क्या!

महाराजजी बोले– सास–बहू शान्तिसे रहें तो हमें क्या मतलब और रोजाना आपसमें लड़ें तो हमें क्या मतलब? हमारा मतलब तो यह है कि तुम्हारे घरमें शान्ति, आनन्द रहे. यह शक्ति यंत्रमें नहीं है. यह शक्ति इस बातमें है कि सामने न बोले और जैसा कहे, वैसा कर दे. देखो, दूसरा कोई जन्तर मन्तर की बात कहे कि हमें देवता सिद्ध है, हम तुम्हारेको ऐसा कर देंगे, वैसा कर देंगे तो डरना नहीं! इसीलिये तुमको यंत्र खोलकर दिखाया है. जन्तर मन्तरको मैं नहीं मानता. परंतु तुम्हारेको मेरी बातपर विश्वास हो जाय, इसलिये यंत्र बनाकर दिया है. बड़ों के सामने बोलना नहीं और उनकी आज्ञाका पालन करना– इन दो बातोंका घरके सभी लोग पालन करें तो आपके लोक और परलोक दोनों सुधर जायंगे. कभी सास कोई ऐसा काम करनेको कह दे, जिससे आगे नुकसान दीखता हो तो हाथ जोड़कर खड़ी हो जाय. वह पूछे कि खड़ी क्यों है, तो कहे कि आपका काम तो मैं कर दूंगी, पर इससे बिगाड़ हो जायगा. वह कहे कि नहीं–नहीं, यह काम करना है, तो वैसा कर दे. अगर काम बिगड़ जाय तो शेखी न बधारे कि देखो, मैंने तो पहले ही कह दिया था, पर आपने माना नहीं! प्रत्युत बड़ी नम्रता, सरलता, निरभिमानता रखे. महाराजजीकी इन बातोंका सब पर बड़ा असर पड़ा.

सब भाई बहन से प्रार्थना है कि आप लोग भी आज इस विलक्षण यंत्रको धारण कर लें कि बड़ोंके सामने नहीं बोलेंगे, उनका तिरस्कार, अपमान, अवहेलना नहीं करेंगे और वे जैसा कहेंगे, वैसा कर देंगे. फिर आपके घरों में भी शान्ति, आनन्द हो जायगा.

बाल अवस्था में ही बच्चों को बनाएं सुसंस्कारवा

नन्हें मुन्ने बच्चों की आध्यात्मिक धार्मिक चर्चायें

आधुनिक युगीन भारतवर्ष में आज के समय में भक्ति का संचार भी दिनोंदिन बढ़ रहा है. आज युवा पीढ़ी में भी भक्ति आस्था देखने में आ रही है. अब हर व्यक्ति की धारणा हो गयी है कि प्रभुकी सत्ता सर्वत्र व्याप्त है. सारी सृष्टि उस परमात्मा की सत्ता से ही चल रही है. इसे मानने वालों में हर वर्ग चाहे वो अमीर गरीब राजा रंक हो सभी मानते हैं. सारा संसार भावना व विश्वास पर टिका हुआ है. स्वानुभूति द्वारा पूजा पाठ भक्ति भाव से मनमें अलौकिक शान्ति मिलती है. किसी मंदिर या संत महापुरुषों के पास जाने से अनोखी सुख शान्तिका आभास होता है. संसारी प्रपञ्च तो दुःखके हेतु हैं. अतः सुखानुभूति के लिये भगवत चिन्तन ही सर्वोपरि है.

आज समय समय पर मनाये जाने वाले भारतीय संस्कृति के प्रमुख पर्व उत्सवों दीपावली, महाशिवरात्रि, जन्माष्टमी, नवरात्रा, सांई टेऊँराम जयंती आदि पर बड़ी संख्यामें श्रद्धालु मंदिर,पूजाघरों पर दर्शन करते नजर आते हैं. आस्था व विश्वास पर टिका संसार जन जन को भगवान व गुरुओं के सदुपदेशों की ओर प्रेरित करता है. वास्तव में सच भी है हरएक मनुष्य को भगवान गुरु के प्रति सच्ची श्रद्धा रखनी ही चाहिये.

घर–परिवार में बड़ों की धार्मिक प्रवृत्तियों से उनके बच्चों में भी धार्मिक संस्कार उत्पन्न होते हैं. जैसा वातावरण मिलता है वैसे ही गुण उनमें विकसित होते हैं. कच्चे घड़े की भांति बच्चों का दिल भी भगवान की तरफ जुड़ जाता है. उनके मन में परमसत्तावान भगवान के प्रति श्रद्धा आस्था बढ़ जाती है. और समय पाकर वह बालक संस्कारवान बन देश समाज जाति का गौरव बनते हैं. प्रत्येक पालक का कर्तव्य है कि बच्चोंको अच्छे स्थानों पर एवं भगवानके मंदिर में अवश्य ले जाया करें, इससे बालक चरित्रवान, गुणवान, भक्तिवान बनकर अपना व कुल का नाम उज्जवल कर सकेगा.

सांई टेऊँराम, गुरुनानक, नामदेव, कबीर आदि संत महात्माओं भक्तों को बाल्यावस्था में ही भक्तिमय व ज्ञानमय वातावरण मिला, जिसके प्रभावसे आज वे पूजनीय बन गये. अतः हमें भी अपने बालकों को ऐसा ही बनाना चाहिये. ऐसा ही भक्तिपूर्ण वातावरण आज बाबा टेऊँराम के दरबारों श्री अमरापुर स्थान पर सहजता से देखने में आ रहा है. प्रतिदिन व विशेष रूप से हर शनिवार के दिन तो हजारों की संख्या में माता पिता के साथ बच्चों के समूह मंदिर में दर्शनों को आ अगर किसी कारणवश उनके पालक मंदिर पर आने असमर्थता दिखाते हैं तो भी उनके बच्चे उनको विशेष हु पूर्ण आग्रह कर बाबा के दरबार में ले ही आते हैं. उन बच्चे भी पक्का विश्वास व नियम बन गया है. हर शनिवार को अ पर बड़ों के साथ बच्चों का भी सैलाब उमड़ता है ऐसे देश विदेश के हर प्रेम प्रकाश आश्रम पर देखे जा सक सभी बच्चे उत्साहपूर्वक बाबा के दरबार में भजन ग सतनाम साक्षी महामंत्र के जाप सहित हर सतकार्य में ब कर भाग लेते हैं. उनका विश्वास व लगन ऐसी है कि जन्मो हो या और कोई त्यौहार! वे अपने घरवालों के साथ बाब दरबार पर आकर दर्शन अवश्य ही करते हैं. ऐसे ही भत्ति से ओत–प्रोत बालकों की गुरु के प्रति आध्यात्मिक ज्ञान बालचर्चा का आईये हम भी चितंन करें–

८ वर्षीय **महिमा रामचन्दानी** अपनी अम्मासे क है–अम्मा मैं भी सात शनिवार लगातार गुरुदरबार पर चल वह नन्हीं बालिका स्कूल से आकर अम्मा के साथ हर शनि बाबा के दर्शन करती है. एक **पाँच वर्षीया बालिका** से सं पूछा– बेटा! ये पर्स किसका है? उसने कहा– मेरा है. सं कहा– हमें दे दो! तब बालिका बोलती है– मैं ये पर्स किस नहीं दूंगी. क्यों नहीं दोगी? बोली– इसमें मेरे गुरुबाबा बैठे फिर उसने पर्स में से साँई बाबा टेऊँराम की तस्वीर निकाल दिखाई. मालवीय नगर की नन्हीं **लवीना सेवानी** परीक्षा में जाती है तो माँ से कहती है– माँ! मैं अपने साथ गुरुबाबा चित्र ले जाऊं. वे मेरी Help करेंगे. ऐसी अटूट भावन बच्चों में.

मालवीय नगर जयपुर निवासी **यश आड** जिसकी आयु मात्र ५ वर्ष है, की संतों के प्रति सच्ची ल श्रद्धा देखें– स्कूल में फेन्सी ड्रेस वेशभूषा प्रतियोगिता दादा ने पूछा– बेटा! स्कूल में क्या बनकर जाओगे? देखो बालक ने क्या जवाब दिया– मैं सांई टेऊँराम बाबा बन जाऊंगा. वह बाबा टेऊँराम बनकर ही स्कूल गया. ए **अरोड़ा** स्कूल के कार्यक्रमों में प्रथम आई. किसी समाचार के पत्रकार ने उससे साक्षात्कार (इन्टरव्यू) लेते समय पूछ तुमने पहले किसी प्रतियोगिता में भाग लिया है. उसने बड़ा सुदंर जवाब दिया– मैंने अमरापुर स्थान द्वारा आयो आध्यात्मिक दोहा स्मरण प्रतियोगिता में भाग लिया है. उसी

न्हें प्रतियोगिताओं में भाग लेने की प्रेरणा मिली.

दो वर्षीय **वंश मोरवानी** माता पिता के साथ हर निवार को श्रीदरबार में आता है. बाबा की अनन्त कृपा का त्र! एक बार संतों ने पूछा– वंश! आप कौन हो? तब वह ड़ा ही सुदंर मार्मिक जवाब तोतली बोली में देते हुए कहता – मैं छोटा छोटा टेऊँराम सांई हूं. पांचवी कक्षा का **8 वर्षीय द्यार्थी** पढ़ाई में कमजोर स्मरण शक्ति के कारण पिछड़ा रहता . संतों ने कहा– आध्यात्मिक प्रतियोगिता के दोहे अच्छी ह याद करके सुनाओ! उसने कहा– मुझसे याद नहीं होगें. र भी विश्वासपूर्वक प्रयास करके सांई टेऊँराम दोहावली के हे याद किये. गुरुकृपा से उसने कंठस्थ दोहे सुना भी दिये. ब हर वर्ष प्रतियोगिता में भाग लेता है. अब उसकी स्मरण क्ति भी बढ़ गयी है. इस वर्ष की प्रतियोगिता में उस बालक प्रथम स्थान प्राप्त किया था.

कृष्णा नाम का **3 वर्षका सुसंस्कारित नन्हा बालक!** माता पिता के साथ नित्य नियम से श्रीदरबार आता है. उस लक में एक खास बात देखने में आयी कि वह श्रीमंदिर के र्शनों के पश्चात् सभी संतों को दण्डवत् होकर प्रणाम करता सांगानेर निवासी नन्हा **ऋषि**! यथा नाम तथा गुण से रेतार्थ! जब भी अपने पालकों के साथ संतों के पास आता है बड़े ही श्रद्धा के साथ दण्डवत प्रणाम करता है, और तब क नहीं उठता है, जब तक उसके सिर पर हाथ न रखा जाय. ऐसे बालक क्यों नहीं संस्कारवान बनेगें. **विशाल** व **गुड़िया** न के दो बालक संतों से कहते हैं– सांई आप तो बोलते हो, बार आया करो, पर आप तो हमारे पास आते नहीं हो! र्मल हृदय बालकों की मनमोहक मीठी वाणी उनकी ध्यात्म के प्रति रुचि का परिचायक ही है.

नन्हें नन्हें बालकों के मन में बाबा टेऊँराम स्वत: राजमान हो गये हैं. भक्ति का सञ्चार जयपुर सहित देश के हर ग में दिखायी देता है. जयपुर की कॉलोनीयों में तो नन्हें लकों के मुख पर एक ही बात होती है– **टेऊँराम बाबा मेरा तेरा नहीं वो मेरा है.** घर परिवार वालों के साथ नन्हों की कझोंक प्रतिदिन चलती ही रहती है. ये प्रभाव है बाबा की बार में आने का! बालकों के मन में गुरु के प्रति सच्चा प्रेम त्र उत्पन्न होने लगता है. हर कोई बाबा को अपना बनाना हता है. कोई रात को सोते समय सतनाम साक्षी महामंत्र का ८ बार जाप तो कोई ध्यान, स्मरण तो कोई हे परमपिता र्थ बाबा! वाली प्रार्थना करके सोता है. और प्रात:काल तापिता को सतनाम साक्षी कहकर प्रणाम कर स्कूल जाते हैं. ऐसे मन को मोहने वाले नजारे हर प्रेमप्रकाशी के घर पर सत्नाम साक्षी की गूञ्ज सहित देखे जा सकते हैं.

नित्यनियम से अमरापुर पर आने वाली ३ वर्षीय **धारा कृपलानी** जयबाबा करके सम्बोधित करती है. घर पर जब कुछ विशेष व्यञ्जन बनते हैं तो अम्मा से कहती है– अम्मा! जयबाबा को भी घर पर बुलाओ. फिर स्वयं ही मीठी वाणी में कहती है– जयबाबा! मेरे घर आओ, मैं आपको आलू का परांठा खिलाऊंगी. ऐसा शुद्ध भाव हृदय से व्यक्त करती है. ऐसे ही ब्रह्मपुरी में रहने वाली नन्हीं **गुड़िया** संतों को फोन करके कहती है– सांई धुनि सुनाऊं. **गुरुदेव मेरे हैं– योगीराज मेरे हैं, खण्डू वाले बाबा टेऊँराम मेरे हैं** आदि संकीर्तन सुनाकर बाबा के प्रति आत्मीयता प्रकट करती है. आज जयपुर महानगर में छोटे बच्चों का जन्मदिवस हो कोई उत्सव हो या परीक्षा हो. वह पहले बाबा के दरबार का दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त करना नहीं भूलते.

सिन्धी कॉलोनी में रहने वाले **भागवानी परिवार** के बच्चे तो सत्नाम साक्षी के सिवाय कुछ जानते ही नहीं साथ ही आपसमें **टेऊँराम बाबा मेरा है** की रट लगाये रहतेहैं आध्यात्मिक प्रतियोगिता में तीन वर्षीया नन्हीं बालिका **दीपिका सतवानी** ने तो सांई टेऊँराम जीवन लीला के ३६ पद कण्ठस्थ कर मञ्च पर सुनाकर सबको आश्चर्यचकित कर दिया था. मालवीय नगर की २ वर्ष की नन्हीं बालिका **चाहत जेठवानी** तो जब कोई घर का सदस्य बाहर जा रहा होता है तो उसकी एक ही आशा होती है. चल रहे हो सांई पास! हमेशा उसकी जुबान पर सांई पास (श्री अमरापुर स्थान) पर चलने की उत्कण्ठा होती है. अग्रवाल फार्म की नन्हीं **गुड़िया** तो सदैव भजनामृत में लीन रहती है. उससे जब भी पूछो तो एक ही बात कहती है– **वेठो आहे सांई!** का उद्घोष सस्वर सुनाती है.

अब ये बालक बड़े होकर भी इसी प्रकार अपने कुल कुटुम्ब जाति धर्म देश का नाम गुरु के सानिध्य में ऊंचा करें. इसके लिये हर माता–पिता को भारतीय संस्कृति के अनुसार बच्चों को साष्टाङ्ग प्रणाम करना सिखायें. मंदिर आदि में ले जाना, संतों का आशीर्वाद प्राप्त करना, शास्त्रों का अध्ययन व सत्संग स्थल पर ले जायें. जिससे बाल मन से ही शुभ संकल्प, शुभ कर्म, शुद्ध मन से भक्ति भाव का सञ्चार होगा और वे बड़े होकर अपना व अपने परिवार का नाम उज्जवल कर कीर्तिवान बनेगें. बाल्यावस्था में दिया गया ज्ञान जीवनपर्यन्त हृदयपटल पर अङ्कित रहता है.

–साधक, अमरापुर, जयपुर

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल ट्रस्ट द्वारा समस्त आश्रमों मण्डलियों के लि

अति आवश्यक सूचना

प्रेम प्रकाश संदेश के जनवरी अङ्क में पृष्ठ ७ पर प्रकाशित अति आवश्यक सूचना को समस्त प्रेम प्रकाश आश्रम के व्यवस्थापकों, मण्डलियों ने पढ़ा ही होगा. इस सम्बन्ध में पुन: सभीसे निवेदन है कि आप सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज के जन्म शताब्दी वर्ष (९ अगस्त २००६ बुध. से २८ अगस्त २००७ मंगल. तक) को किस रूप में आपने यहां आयोजित करने का विचार कर रहे हैं.

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल ट्रस्ट श्री अमरापुर धाम जयपुर के विचारानुसार इस अवसर पर पूज्य सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज के मुख्य ध्येय जीव–सेवा व नामसुमरण को ध्यान मे रखते हुए महोत्सव समय में दीनहीन, गरीब, असहाय, निराश्रितों, रोगियों, वृद्धों, नेत्रहीन, नेत्र व्याधि से पीड़ित लोगों की सेवा के अतिरिक्त लोकोपयोगी नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर, रक्तदान शिविर, जीवसेवा के अन्तर्गत पशु–पक्षीयों की सेवा जेसे कार्यक्रमों के साथ अन्य परम्परागत कार्यक्रम की रूपरेखा के साथ इस वर्ष में सामूहिक रूप से संकल्पित नामसुमरण की योजना भी बनायी जा सकती है. जनसेवा के कार्यों को स्थायी रूप से भी इस अवसर पर शुरू किया जा सकता है. इसीलिये शीघ्र ही सभी आश्रमोंके माननीय व्यवस्थापक, मण्ड समितियां अपने यहां कार्यकर्ताओं की बैठक कर ज कार्यक्रमों की रूपरेखा बनाकर उसे सुदंर लेर कम्प्यूटर टाईप करवाकर पूज्यपाद सद्गुरु भगतप्रकाशजी महाराज, श्री अमरापुर स्थान, ज नाम १५ मार्च २००६ तक आवश्यक भिजवायें. एक प्रति व्यवस्थापक, प्रेम प्रकाश संदेश, प्रेम आश्रम, गाढ़वे की गोठ, लश्कर, ग्वालियर–४७४ पास भी भेजें. समूचे विश्व में मनाये जाने वाले कार्य एक वृहद् कार्यक्रम कैलेण्डर चैत्र मेले पर जारी कि का प्रयास किया जा रहा है.

अभी तक प्राप्त समाचार के अनुसार श्री अ धाम जयपुर द्वारा स्वामी टेऊँराम पॉली क मानसरोवर जयपुर के ऊपरी मञ्जिल पर स्वामी शां धर्मार्थ नेत्र अस्पताल शीघ्र ही खोला जा रहा है. ग आश्रम स्थित स्वामी शान्तिप्रकाश धर्मार्थ नेत्र चिकि द्वारा जन्मशती वर्ष में नियमित ऑपरेशनों के अति हजार और ऑपरेशन करके अन्धत्व निवारण की नेत्रपीड़ितों की सेवाका लक्ष्य निर्धारित किया गया है काटजू कालोनी, मुरैना व डबरा आश्रम पर भी इस नेत्र शिविर लगाये जाने का निश्चय किया गया है.

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का आध्यात्मिक सत्साहित्य

साँई टेऊँराम जीवन चरितामृत (चारों भाग) हिन्दी	१२५ रु.	अमरापुर दर्शन
साँई सर्वानन्द जीवन चरितामृत (दोनों भाग)	५० रु.	चूड़ाला शिखरध्वज कथा (कवित्त)
साँई सर्वानन्द सन्देश (अनमोल वचन)	२५ रु.	ब्रह्मदर्शनी
सद्गुरु टेऊँराम चालीसा (पॉकेट साईज पुस्तिका)	१ रु.	अमर कथा
नित्य नियम प्रार्थना	५ रु.	श्री अमरापुर वाणी
प्रेम प्रकाश दोहावली	२ रु.	गुरु आराधना (भजन)
साक्षी दर्शन	२ रु.	गुरु वन्दना (भजन)
यमराज नचिकेता कथा (कवित्त)	२ रु.	

महाराजश्रीके पुस्तक, कैसेट्स, वीडियो सीडी, कीरिंग, लॉकेट, पेन, लेमीनेशन फोटो, दीवार घड़ी, अलार्म घड़ ज्योत आदि सामान श्री अमरापुर स्थान सहित देश के प्रमुख प्रेम प्रकाश आश्रमों के बुक स्टॉलों पर हमेशा उपलब्ध है. श्री प्रेम मण्डल की मासिक हिन्दी पत्रिका प्रेम प्रकाश संदेश के लिये भी इन बुक स्टॉलों से सम्पर्क करें.

सूचना: सभी प्रेम प्रकाश आश्रमों के व्यवस्थापकों मण्डलियों से निवेदन है कि महाराजश्री के विशेष कार्यक्रम की वीडियो की मूल प्रति श्री अमरापुर स्थान, जयपुर पर शीघ्र ही भिजवाने का कष्ट करें. जिससे उसका सम्पादन कर उसे संस्कार दिखाया जा सके. इस सम्बन्ध में अधिक जानकारी के लिये जयपुर में श्री श्याम मनवानी से ९४१४०–४ ०१४१–२७४०८५० पर सम्पर्क करें.

कर्मयोगी उदार हृदय ब्रह्मनिष्ठ प्रेमावतार सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज

प्रत्येक युग में माँ धरनी की करुणामय पुकार स्वरूप नेत्य अवतारी संतवृन्द के अवतरण इस धरा पर होते आये हैं. सी कड़ी में हमारे प्रेम प्रकाश पंथ के प्रवर्तक धर्म संरक्षक ज्ञान े अतुलनीय भंडार मङ्गलमूर्ति आचार्य श्री सद्गुरु स्वामी ऊँरामजी महाराज तत्पश्चात् उन्हीं के पथ प्रवर्तक योगीराज ानस्वरूप सद्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज व कर्मयोगी मस्वरूप सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज.

सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज एक र्मयोगी उदार हृदय गुरुनिष्ठ प्रेमस्वरूप होने के साथ भगवान ीकृष्ण के अंशावतार हुए हैं. जिनका उद्भव अविभाजित ारत देश के सिन्ध प्रदेश के एक छोटे से ग्राम चक में हुआ. ७ र्ष की अल्पायु में देवी माँ के दर्शन स्वरूप बाह्यचक्षु के लोप जाने के उपरांत संत गुरु परमात्मा की शरणागति होकर ष्काम सेवा निर्मानता की पूर्णता स्वरूप देवदुर्लभ उत्तम ञ्जिल की कठिन राह में भक्ति करके लाखों भक्तों को परमपद ी ओर अग्रसर करके परमगति को प्राप्त किया. उनकी काव्य चना तो प्रभु परमात्मा के चरणों की प्रीति हृदय में जागरुकता ान करने वाली है.

ऐसे महापुरुषों की स्मृति हमारे जीवन की दिशा का केत प्रदर्शित करती है. ऐसे युगपुरुष सद्गुरु महाराज के नगिनत उपकारों से हम सब के हृदय आज तक आच्छादित तो क्यों न हम सब ऐसे हृदय सम्राट कर्मयोगी प्रेम व ज्ञान के गर सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज की पवित्र स्मृति लोकहित में आज ही कलम कागज की सहायता से जन तक पहुंचावे, इस पवित्र कार्य में आपका प्रिय प्रेम प्रकाश देश आपके भावों को सुदंर रूप से सहेजकर पाठकों तक चायेगा. आपके सुदंर भाव संस्मरण, आलेख, साहित्य, काव्य के क्षेत्र में महाराजश्री का योगदान, महाराजश्री के नेतृत्व में प्रेम प्रकाश पंथ का विकास, अविस्मरणीय जनहितकारी घटनाओं, कलामों भजनों के रूप में हो सकते हैं.

९ अगस्त २००६ बुधवार को सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज के पवित्र अवतरण का १०० वाँ वर्ष जन्म शताब्दी के रूप में एक विशाल मेले के साथ श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के मुख्यालय श्री अमरापुर स्थान जयपुर में श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्यपाद सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज की पवित्र अध्यक्षता में पञ्चदिवसीय महोत्सव मनाया जाएगा. इसीके साथ महाराजश्री का जन्म शताब्दी वर्ष भी ९ अगस्त से समूचे विश्व में शुरू होगा. जिसका समापन २८ अगस्त २००७ मंगलवार को होगा. इस पूरे जन्मशती वर्ष के समस्त अङ्को में सद्गुरु महाराज जी के पवित्र स्मृतियों जीवन प्रसङ्गो को प्रकाशित किये जाने का निश्चय किया गया है. साथ ही ९ अगस्त जन्मशती के पुनीत अवसर पर आपका प्रिय प्रेम प्रकाश संदेश अपने संस्थापक सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज के जीवन–दर्शन को आप सभीके सहयोग से एक संग्रहणीय विशेषांक के रूप में प्रकाशित करने जा रहा है. तो उठायें अपनी लेखनी और आज से ही सद्गुरु महाराज के प्रति अपने हृदय के भावों को मूर्तरूप देकर हमें सुदंर लेखन अथवा कम्प्यूटर टाईप करवाकर भेजें.

सत्गुरु शान्तिप्रकाश जी, करुणा के भंडार।
जन जीवन कल्याण हित, लीना है अवतार।।
प्रेम भक्ति व ज्ञान का, कीना परम प्रकाश।
मिलकर प्रेमप्रकाशियों, करें उन्हीं का हाल।।
प्रभुकृपा वश मिला, जन्म शताब्दी साल।।

आपके सहयोगपूर्ण विश्वास के साथ – व्यवस्थापक

श्री अमरापुर स्थान जयपुर में बसन्त पञ्चमी महोत्सव

कार्यक्रम गुरुवार २ फरवरी २००६

प्रातः ७ से १० बजे तक प्रार्थना, सत्संग, साँई सर्वानन्द जी महाराज की बसन्त पञ्चमी महिमा प्रवचन कैसेट, माँ सरस्वती व गुरु महाराज की मूर्तियों का कुगूं केसर तिलक आरती से पूजन.

विशेषः बाबा के श्रीमंदिर में श्रीविग्रहों का नूतन वस्त्रालङ्कार से शृङ्गार. मुख्य द्वार पर रङ्गोली व प्रकोष्ट में गुरु महाराजजी का पीत पुष्पों से शृङ्गार.

विशाल रक्तदान शिविर भी इस अवसर पर श्री अमरापुर में आज के दिन प्रातः ८ से दोपहर 1 बजे तक आयोजित किया गया है. इच्छुक प्रेमी महादान रक्तदान कर पुण्य के भागी बनें.

खूबसूरत स्वस्थ आँखें अनुभूत नुस्

पूर्व के अङ्को में आँखों की नज़र कैसे बढ़े व नजर के चश्मे से छुटकारा पाने के उपाय व इलाज लिखा था. पत्रिका में पढ़कर कुछ मित्रों ने कहा कि आपका लेख पढ़ा, बहुत पंसद आया. इस पर मैंने पूछा– कि उस पर आपने अमल किया है. तो किसी ने कहा हां शुरू कर दिया है और कोई चुप रहा. उस पर महापुरुषों के श्रीमुख से सुना एक प्रसङ्ग स्मरण हो आया, जिसे पाठकों के समक्ष रख रहा हूं.

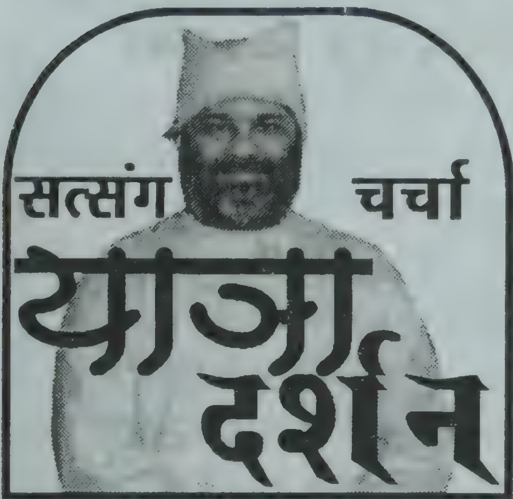
एक नगर में एक सेठ रहते थे. बड़े श्रद्धावान् और उनके घर में एक सद्ग्रंथ था, जिसे वह नित्य बड़ी श्रद्धा से नित्य पूजते, आँखों पर लगाते, अगरबत्ती करते, चँवर झुलाते, रेशमी रुमाल में रखते, परिक्रमा लगाते. एक दिन सेठ को किसी कार्यवश दूसरे नगर को जाना पड़ा. वहां से उसने किसी आवश्यक कार्य के लिये पुत्र को एक पत्र लिखा. लड़के को जब पत्र मिला तो वह बड़ा खुश हुआ, लिफाफे को चूमा, आँखों से लगाया, सर पर रखकर नाचा, रेशमी रुमाल में लपेटकर उसकी अगरबत्ती करके परिक्रमा करी, झूले में रखकर झुलाया. यह क्रिया रोज चलती रही. कुछ दिन बाद सेठ ने दूसरा पत्र लिखा. लड़के ने उसकी भी उसी प्रकार पूजा प्रतिष्ठा करी. इसी प्रकार सेठ के लिखे तीसरे पत्र को भी सेठ के लड़के ने प्रतिष्ठित किया. आखिर सेठ परेशान होकर घर वापिस आया. और क्रोध से लड़के को बोला कि मैंने तुमको फलांकार्य के लिये तीन पत्र लिखे, उनका क्या हुआ. लड़का शान्तभाव से पिताजी को उस कमरे में लाया. और कहा–पिताजी! मैंने आपके पत्रों को बड़ी श्रद्धा से पूजित कर उनको प्रतिष्ठित कर दिया है एवं नित्य दोनों समय उनकी पूजा करता हूं. यह सुनकर सेठ को बड़ा क्रोध हुआ, और कहा कि भलेमानस! उसमें जो लिखा था, उसे पढ़कर उस पर अमल करते तो मेरा इतना बड़ा नुकसान न होता. तब लड़के ने भोलेपन से कहा कि पिताजी! अपने घर में भी एक ग्रंथ है. आप भी तो रोज उसकी ऐसे ही पूजा परिक्रमा करते हैं, आपने भी कभी ग्रंथ को पढ़कर उस पर अमल कहां किया है. इसलिये मैंने भी आपको देखकर उसी प्रकार किया. सेठ यह सुनकर चुप रह गये. कहने का तात्पर्य यह है कि हम भी प्रेम प्रकाश संदेश को प्रेम से पढ़ें. उसमें आपको आध्यात्मिक, मानसिक और शारीरिक तीनों बातें मिलेंगी. इस लोक के लिये भी और परलोक के लिये भी. इसलिए आप पढ़कर उस पर अमल करेंगे तो इहलोक के आनन्द के साथ परलोक का बैंक बैलेन्स भी बनेगा. अब आगे बढ़ते हैं.

इस अङ्क में आपको आँखों को किस प्रकार सुंदर स्वस्थ रखा जाये उस पर विचार करेंगे. जिनका शर तन्दुरुस्त लेकिन आँखें कमजोर या छोटी हैं वह खूबसूर कहला सकता. आँख की लम्बाई एक कान से दूसरे का जितना फासला होता है उसका सातवां हिस्सा होना च आँख का सफेद हिस्सा बिल्कुल सफेद होना चाहिये. उस में मैलापन होना पित्त की अधिकता और मंदाग्नि का संव आँखों को बहुत दिनों तक बुढ़ापे तक तन्दुरुस्त बनाये रख लिये सबसे अच्छा व्यायाम है. पानी में तैरना या नगें घास पर चलना साथ ही पढ़ने के लिये ठण्डक भरे प्रक बैठें तो बेहतर होगा.

डॉक्टरों का कहना है कि सूर्य की तरफ ज्यादा से अन्य व्याधियों के अतिरिक्त उनका आकार भी छोटा हे उनको बड़ा बनाने के लिये पलकों को गिराये बगैर जित हो सके खाली घड़े में देखना चाहिये. आँखों के चारों ओ गहरी खाईसी बनी रहती है, जो बदसूरती की एक निश कुछ तरकीबें लिख रहा हूं उससे खाई भरने लगती है वर्जिश है. प्रात: बिस्तर से उठते ही आरसी (दर्पण) के खड़े होकर हथेलियों को आपस में खूब रगड़ें और ज गरम हो जायं तो उनसे खाई के ऊपर की खाल चम खींचना चाहिये. हथेलियों को रगड़ने से उनमें पैदा हुई ऊ उपयोग हम इस प्रकार से आँखों के नीचे बनी खाई को कर सकते हैं. इसके अलावा हाथ की पहली और दूसरी से नाक के पास से आँखों के नीचे तक धीरे धीरे मालिश से भी यह खाई भरने लगती है. आँखों की सुन्दरता नष्ट वाली बीमारियों में आँखों से पानी बहना सबसे बुरी बीम उसका अनुभूत इलाज है कि नित्य आँखों को त्रिफला धोएं और शुद्ध शहद की सलाई आँखों में लगाने से आँखें होकर सुदंर बनती हैं. आखों की खूबसूरती के लिए एक बैठकर दर्पण में आँखों को गौर से देखें. और स्वच्छ भरा कटोरा बाएं हाथ में रखकर दाएं हाथ की पह अगुंलियों को पानी में भिगो कर धीरे धीरे नाक की तरफ की ओर घुमाएं यानी फेरें और बाईं आँख से देखते र समय मन में यह ख्याल होना करें कि मेरी आँख त खूबसूरत और ताकतवर रहे.यह क्रिया आँख पर अंगुली का क्रम कम से कम ३० से ४० बार तक होना चाहिय प्रकार बायीं आँख पर दाएं हाथ की अंगुलियों से करना इससे पैदा हुई विद्युतीय उर्जा आपकी आँखों को पूर्ण स्व खूबसूरत बनाएगी. इसमें किसी प्रकार का संशय नहीं प्रभु गुरुदेव पर पूर्ण विश्वास करके यह अभ्यास निरन्तर चाहिये.

—नारायणदास तेजूराम हेमराजानी, अम

सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज व संत मण्डली का देशाटन



बड़ौदा व अजमेर में गीता जयंती अजमेर में स्वामी बसंतराम वर्सी उत्सव मुम्बई में वार्षिकोत्सव मेला

जयपुर 10 दिसम्बर

श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्यपाद सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज संत मण्डली व प्रेमियों के साथ दक्षिण भारत में प्रेमियों को भगवन्नाम का अमृत पिलाने के साथ ही पवित्र धाम तीर्थ रामेश्वरम् का दर्शन करके विमान द्वारा दिल्ली होते हुए सड़क मार्ग से जयपुर पहुंचे. यहां प्रेमियों को दर्शन सत्संग का आनन्द कराने के बाद ११ दिसम्बर को अजमेर के लिये रवाना हुए.

अजमेर 11 दिसम्बर शीतल गीता मंदिर

पं. श्री शीतलदास की कर्मस्थली श्री शीतल गीता मंदिर में ६५वाँ श्री गीता जयंती महोत्सव ११ से १५ दिसम्बर तक धामधूम से मनाया गया. इस महोत्सव में भाग लेने के लिये श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज संत मण्डली के साथ ११ दिसम्बर को जयपुर से अजमेर पहुंचे. श्री शीतल गीता मंदिर पधारने पर पं. मोहनदास, पं. भागीरथ, पं. भीष्म देवजानी परिवार के अतिरिक्त आदर्शनगर आश्रम के ट्रस्टी नारायणदास रतनानी, ब्यावर से आये हुए संत भोलानाथ केकड़ी के सुरेश शर्मा के साथ स्थानीय व बाहर से आये सैकड़ों श्रद्धालुओं ने महाराज जी की अगवानी स्वागत सत्कार करके की.

पूज्य स्वामीजी के साथ संत दयाप्रकाशजी, संत ज्ञामनदासजी, संत श्रीमुक्त, संत हरीशलाल, संत लक्ष्मणलाल व दिल्ली गेट अजमेर से पधारे संत शिरोमणि पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्दजी महाराज, संत राजूरामजी, संत ओमलाल एवं भगत शंकर नारवानी ने अपनी अमृतवाणी से उपस्थित जनसमुदाय को मंत्रमुग्ध कर दिया.

पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्दजी महाराज ने गीताज्ञान पर सदुपदेश देते हुए बताया कि गीता का ज्ञान अपने आप में सम्पूर्ण ज्ञान है जो सभी दु:खों की निवृत्ति कर परमानन्द की प्राप्ति कराता है. मोक्ष की प्राप्ति भी भगवान गुरु के संकल्प पर निर्भर करता है जिसका गीता प्रमाण है. जब अर्जुन के रथ की भागदौड़ भगवान श्रीकृष्ण ने संभाली तब प्रभु ने यह संकल्प किया कि जब तक युद्ध चलेगा वे स्वयं रथ की भागदौड़ कर रहे होंगे. युद्ध में जब अश्वत्थामा ने ब्रह्मास्त्र चलाया तब भी युद्ध के मैदान में मरे हुए घोड़े दौड़ रहे थे, टूटा रथ भी चल रहा था. जब युद्ध समाप्त हुआ तब भगवान श्रीकृष्ण ने पहले अर्जुन को रथ से उतारा फिर स्वयं उतरे उसी समय समूचा रथ नष्ट हो गया. ऐसे ही अमरापुर से सद्गुरु टेऊँरामजी महाराज आये यह भी भगवान का संकल्प है.

गीता जयंती पर सद्गुरु महाराजजी ने अपनी अमृत वाणी में भक्तों को सदुपदेश देते हुए कहा कि–

सद्गुरु बुद्धि के नैन में, डारे अंजन ज्ञान।
कहे टेऊँ तम भ्रम हर, दिखलावो भगवान।।
तन मिथ्या जड़ सारा–2,
यह रूप नहीं तेरा, तू दास है न्यारा। मन दर्शन कर अपनो....
गुरुज्ञान के नैनों से, निज आत्म को लखाना।।

आचार्यश्री अपनी अमृतवाणी में बतलाते हैं कि गुरु किस प्रकार अपने शिष्य को शरण में आने पर उसका मार्गदर्शन कर उद्धार करता है. श्रीगीता के उपदेशों द्वारा इसे और अधिक सरलता के साथ व्याख्यित किया सद्गुरु महाराज जी ने. स्वामीजी ने बताया कि मनुष्य का शरीर कितना भी बलवान क्यों न हो, जब उसका मन शोक आदि से विचलित होता है तो उसकी सारी शक्ति समाप्त हो जाती है. जिस प्रकार परिजनों को देखकर अर्जुन का मन विचलित हुआ तो उसने अपने मन को श्रीकृष्णार्पण कर दिया तो उसके शोक का निवारण हुआ. उसी प्रकार शिष्य भी अपने गुरु भगवान की शरण में जाकर अपने मन को अर्पित करता है तब गुरुदेव भगवान बिना किसी स्वार्थ के आये हुए भक्त का कल्याण करते हैं. भगवान श्रीकृष्ण ने भी अर्जुन को गीताज्ञान उपदेश द्वारा उसकी स्मृति को जगाया कि तू एक क्षत्रिय है अपने कर्तव्यमार्ग में प्रवष्टि होकर धर्म की रक्षा के लिए इस युद्ध को कर. क्योंकि क्षत्रियों का कर्तव्य है कि धर्म की रक्षा करे इसमें बाधा पहुंचाने वाले से युद्ध कर उसे मार डाले. सुख दुखों के बीच से ही तुझे शान्ति की खोज करनी है. ऐसा जब होगा जब गुरुदेव भगवान को हम अपना मन समर्पित करेगें तो गुरुकृपा होगी.

12 दिसम्बर अहमदाबाद

अजमेर से बड़ौदा जाते समय पूज्य महाराजश्री संत मण्डल ने अहमदाबाद में बन रहे विशाल व भव्यतम आश्रम का अवलोकन किया. सरदार नगर स्थित स्वामी टेऊँराम आश्रम में पूज्य स्वामी स्वयंप्रकाशजी महाराज व स्वामी हंस प्रकाशजी

महाराज से भी मिलकर उनका स्वास्थ्य समाचार प्राप्त किया.

बड़ौदा 12 से 15 दिसम्बर गीता जयंती महोत्सव

श्री मीरा कृष्ण मंदिर बड़ौदा का ३६ वाँ वार्षिक गीता जयंती महोत्सव जो कि अमरापुरवासी सुश्री संत मीरादेवी द्वारा ३५ वर्ष पूर्व स्थापित किया गया था: आज भी परम्परानुसार प्रति वर्ष श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष की पावन अध्यक्षता में धामधूम के साथ मनाया जाता है. इस वर्ष भी ११ से १५ दिसम्बर तक श्री गीता जयंती महोत्सव पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज की अध्यक्षता में सोल्लास मनाया गया.

पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज व संत मण्डली १२ दिसम्बर को सड़क मार्ग से दोपहर दो बजे बड़ौदा पहुंचे. नगर प्रवेश द्वार पर मीराकृष्ण मंदिर के व्यवस्थापक संत संजय के साथ ग्वालियर से पहुंचे संत हरिओमलाल, मंदिर के ट्रस्टी व बड़ी संख्या में प्रेमीयों ने महाराजश्री की अगवानी प्रसन्नतापूर्वक फूलों की वर्खा करके व पुष्पमालाएं पहनाकर की. कारों के काफिले में महाराजजी को संत कंवर कॉलोनी लाया गया. यहां पर झूलेलाल मंदिर से पूज्यश्री के सम्मान में स्वागत शोभायात्रा निकाली गयी. पूज्य स्वामीजीके साथ संत दयाप्रकाशजी, संत हरिओमलाल जी, संत झामनदास जी, संत रामप्रकाशजी भी शोभायात्रा में सुसज्जित रथों में बैठे नगरवासियों को संत दर्शन से निहाल कर रहे थे. नगर के प्रमुख बाजारों मार्गो से होते हुए ३ बजे मीराकृष्ण मंदिर पहुंचे.

सायं ५:३० से ८:१५ तक आयोजित सत्संग वर्खा में संत हरीश कुमार, संत लक्ष्मणलाल, संत श्रीमुक्त, संत झामनदास, संत हरिओमलाल के भजन सत्संग के बाद पूज्य महाराजश्री की अमृतवाणी का अखुट लाभ प्रेमियों ने लिया. इस अवसर पर पूज्यश्री ने अपनी सारगर्भित मृदुल ओजस्वी वाणी में बताया–

संत शास्त्र व सत्संग जीव को जगाने के साधन हैं. ये गीता जयंती के उपलक्ष में सत्संगरूपी मेला भी आत्मज्ञान को जगाने का एक साधन है. सुख दु:ख तो जीवन में आते ही रहते हैं पर अपने मानव धर्मको कभी नहीं छोड़ना चाहिये, दृष्टि जब तक शरीर पर है तब तक ही दु:ख है. राजा परीक्षित की नजर भी जब तक शरीर अर्थात् जड़ के साथ थी, तो भय मृत्यु उसके साथ लगा हुआ था. पर जब गुरु शुकदेवजी का उपदेश उनके हृदय में बैठा तो राजा परीक्षित का जीवन भी शरीर जीवन्त के रहते भी जीवनमुक्त हो गया. पूज्य महाराज जी ने इसे और स्पष्ट करते हुए बताया कि जब तक पानी में चञ्चलता बनी रहती है तब तक उसमें अपना प्रतिबिम्ब देख पाना संभव नहीं. ऐसे ही जब तक मन एकाग्रचित्त नहीं होगा तब तक आत्मस्वरूप का साक्षात्कार संभव नहीं होगा. यह सब कुछ कठिन होते हुए [illegible] सद्गुरु की पूर्ण शरणागति होने पर सहज बन जाता है.

पेटलाद, आनन्द 13 दिसम्बर

१३ दिसम्बर को बड़ौदा से प्रात: ६ बजे चलक[illegible] प्रात: ९:३० बजे पेटलाद पहुंचे. इस छोटे से नगर में प्रेमियों [illegible] छोटा सा आश्रम बना कर गुरुदेव के दिये हुए नामसुमरण [illegible] ज्योति जगा रखी है. इसी आश्रमके बाहर मैदानमें पूज्यश्री [illegible] स्वागत व सत्संग के लिये विशाल पण्डाल सजा हुआ था, ज[illegible] पर पेटलाद का पूरा सिन्धी समाज सैकड़ों की संख्या [illegible] महाराजश्री के सत्संग दर्शन का लाभ लेने के लिये उपस्थित थ[illegible] यहां पर प्रेमियों ने श्री मनोहरलाल, विजय कुमार के सा[illegible] मिलकर सद्गुरु महाराज व संत मण्डल का आत्मीय स्वाग[illegible] किया. यहां पर सत्संग के अमोलक मोती प्रेमियों ने संतों [illegible] पूज्यश्री के श्रीमुख से बटोरे. अल्पाहार लेने के बाद यहां [illegible] दोपहर ११ बजे आनन्द नगर पहुंचे.

आनन्द शहर के प्रेमी जो सुबह से ही पलक पाव[illegible] बिछाये महाराजश्री के दर्शनों के लिये अधीर हो रहे थे, के दि[illegible] दर्शन पाकर बैंड गायन के मध्य नाचते गाते भावविभोर [illegible] स्वागत सत्कार करने लगे. शोभायात्रा के साथ पूज्य स्वामी[illegible] व संत मण्डली को सत्संग आयोजन स्थल सिन्धु सेवा स[illegible] लाया गया. यहां पर नगर पंचायत के नेतृत्व में प्रेमियों [illegible] स्वामीजी का अभिनन्दन कर प्रसन्नता व्यक्त की. यहां [illegible] १२:३० बजे तक सत्संग की ज्ञानगङ्गा में भक्तों ने खूब डुब[illegible] लगायी. यहां से वापिस चलकर बड़ौदा आश्रम पर सायं ४ ब[illegible] पहुंचे. बड़ौदा में सायंकालीन सत्संग ज्ञान यज्ञ में जिज्ञासुओं [illegible] भाग लेकर अपनी जिज्ञासा का निवारण संतों व सद्गुरु महारा[illegible] के श्रीमुख से निकली अमृतवाणी द्वारा किया.

भावनगर 14 दिसम्बर

बड़ौदा गीता जयंती उत्सवके मध्य ही १४ दिसम्[illegible] को प्रात: ६:३० बजे भावनगर के लिये महाराजश्री ने स[illegible] मण्डल प्रेमियों के साथ प्रस्थान किया. सड़क मार्ग से चल [illegible] ११:३० बजे गुजरात प्रदेश के भावनगर शहर पहुंचे. पू[illegible] पंचायत के साथ मिलकर श्री प्रेम प्रकाश मण्डली ने पूज्य[illegible] संतों का भावपूर्ण स्वागत बैंड गायन व पुष्पवर्खा करके किय[illegible] न्यू सिन्धूनगर कॉलोनी स्थित स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्र[illegible] जिसकी स्थापना सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की आ[illegible] से अमरापुरवासी संत रामदासजी महाराज ने की थी. यहां [illegible] सत्संग की मौज का प्रेमी भक्तों को आनन्द कराने के ब[illegible] प्रेमीयों के घर प्रतिष्ठानों में चरण पखारते हुए दोपहर ब[illegible] २:३० बजे वापिस बड़ौदा के लिये प्रस्थान किया.

बड़ौदा सायं ७ बजे पहुंचे. यहां पर सत्संगानन्द [illegible]

लाभ सत्संग हाल में उपस्थित हजारों भक्तजनों ने सद्‌गुरु महाराज के सानिध्य में लिया.

गीता जयंती के अन्तिम दिवस पर प्रातः हवन यज्ञ के उपरांत श्रीमद्भगवद्गीता के १०८ पाठों का पारायण व श्री गुरु ग्रंथसाहबके दूसरे अखण्ड पाठ व श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ साहब का भोग कार्यक्रम सम्पन्न हुए. सत्संग ज्ञानयज्ञके पश्चात् आम भण्डारे में पाच हजार से अधिक श्रद्धालुजनों ने पावन भोजन प्रसादी को पाया. दोपहर १ बजे बड़ौदा के सुविख्यात हरी शेवा गर्ल्स हायर सैकेण्डरी सिन्धी विद्यालय में महाराज जी का आगमन हुआ. यहां पर विद्यालय ट्रस्ट की ओर से कु. के. टी. नोतानी के नेतृत्व में विद्यालय व्यवस्थापकों व टीचिंग स्टॉफ द्वारा पूज्य स्वामीजी का हार्दिक अभिनन्दन किया गया. सिन्धु समाज का यह विशाल विद्यालय बड़ौदा शहर का गौरव है. यहां पर अन्य शिक्षा के साथ सुखमनी साहब व गुरुवाणी का पाठ भी छात्राओं से कराया जाता है. सद्‌गुरु महाराज ने विद्यार्थियों को अपने इस अध्ययन काल को और अधिक सुदृढ़ करनेके लिये सुविचारित होकर सत्मार्ग पर चलनेकी प्रेरणा की.

सायं ७ से रात्रि ८:१५ बजे समापन सत्संग सभा में भक्तों को गीता ज्ञान की गूढ़ता का सरलता से परिचय कराकर पूज्य महाराज ने सर्वजनहितार्थ पल्लव पाकर गीता जयंती महोत्सव का समापन किया. यहां से रात्रि रेलमार्ग द्वारा अजमेर के लिये प्रस्थान हुआ.

अजमेर 16 से 18 दिसम्बर
स्वामी बसंतराम वर्सी उत्सव

श्री प्रेम प्रकाश आश्रम, दिल्ली गेट अजमेर में आचार्यश्री सद्‌गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज के परम शिष्य वेदांत केसरी पूज्य स्वामी बसंतरामजी महाराज की २५वीं पुण्यतिथि उत्सवपूर्वक संत शिरोमणि स्वामी ब्रह्मानन्दजी महाराज के सानिध्य में मनायी गयी. महोत्सव की अध्यक्षता करने हेतु हाजरांहजूर सद्‌गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज बड़ौदा से अजमेर १६ दिसम्बर को प्रातः रेलमार्ग द्वारा पहुंचे. इसके पूर्व ब्यावर स्टेशन पर महाराजश्री का स्वागत वहां के सैकड़ों प्रेमियों ने संत भोलाराम के नेतृत्व में किया. अजमेर पहुंचने पर पूज्य स्वामीजी, स्वामी मनोहरप्रकाशजी, संत हरिओमलालजी, संत झामनदासजी, संत हरीशकुमार, संत लक्ष्मणकुमार, संत श्रीमुक्त आदि संत मण्डली का स्वामी ब्रह्मानन्दजी महाराज आदर्शनगर आश्रम के ट्रस्टी श्री नारायणदास रतनानी सहित अजमेर व बाहर से आये सैकड़ों भक्तों ने आत्मीयता से स्वागत किया.

स्वामी बसंतराम वर्सी उत्सव के अन्तर्गत १४ दिस. को पूज्य झूलेलाल भगवान की ज्योति स्वामी ब्रह्मानन्दजी महाराज ने प्रज्जवलित की. १६ दिसम्बर को सामूहिक यज्ञोपवीत कार्यक्रम में ७६ बालकों को उपनयन संस्कार से विद्वान ब्राह्मणों ने सुसंस्कारित कर जनेऊ धारण कराये. इस अवसर पर संत मण्डल व सद्‌गुरु महाराज ने बालकों को माता पिता गुरु की सेवा करके उनकी आज्ञा में अपने जीवन को उज्जवल बनाने की प्रेरणा कर आशीर्वाद दिया. १८ दिसम्बर को प्रातः १० बजे १०८ गीता पाठ उपलक्ष में विशाल यज्ञ सम्पन्न हुआ. उसके बाद श्री प्रेमप्रकाशी ध्वजा वंदन कार्यक्रम हर्षोल्लास से सम्पन्न हुआ. प्रतिदिन सत्संग वर्खा में हजारों प्रेमियों ने संतों व सद्‌गुरु भगवान के पावन श्रीमुख से प्रवाहित अमृत को छककर पीया. पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज ने अपने सदुपदेश देते हुए बताया–

हम सदैव प्रत्येक प्राणी में समभाव रखेंगे तो कभी दुखी नहीं होंगे. घर आये आगन्तुक का जल भोजन से सत्कार करेंगे तो मन की शान्ति आपको प्राप्त होगी. सद्‌गुरु टेऊँरामजी महाराज के जीवन में भी हम पाते हैं कि गुरुदेव जो भी मेहमान आता था उन्हें ढ़ोढा चटनी खिलाकर जल पिलाकर सत्कार करते थे. इस प्रकार के अनेक उदाहरणों प्रसङ्गो को सुनाकर पूज्यपाद स्वामी बसंतरामजी महाराज के परोपकारी जीवन के बारे में भी बताकर प्रेमियों को प्रेरणा की.

इस अवसर पर हमारे प्यारे सद्‌गुरु महाराज के श्रीमुख से प्रवाहित अमृतकण–

चौरासी लख योनि का, मानुष है सिरताज।
कह टेऊँ हरि भजन का, कर इस तन में काज।।
तुहिंजी कृपा थिए जहिंते दाता,
दूर तहिंजी थिए सारी उलझन।
ॾींह ॾुखनि जो ॾिसे ना कदुहीं,
तुहिंजो खुशियुनि सां भरियल रहे मन।
तुहिंजे चरननि जो चाकर बणी मां,
जिन्दगानी सफल हीअ बणांया।

सद्‌गुरु महाराजजी ने शहद से भी अत्यंत मिठास से परिपूर्ण वाणी में भक्त समुदाय को सत्मार्ग की ओर अग्रसर करते हुए आगे बताया कि–

चौरासी लख योनियों में प्राप्त सर्वश्रेष्ठ मानव देह को सफल बनाने के लिये हम प्रभु के किये पर श्रद्धा विश्वास रखकर शास्त्रों व गुरु महाराज के दिखाये सतमार्ग पर चलें.

पशु तन की पनहीआं बनी, नर का कुछ नहीं होय।
नर से नारायण बने, कै बन जाने कोय।।
हिकु हिकु दम जो मुल्हु लखु लखु थी, नाम बिना मुल्हु तहिंजो कखु थी।
ॻाल्हि सची मां ॻाल्हायां।।

चोरी चुगली निंदिया करि ना, अवगुण कहिंजे दिलि ते धरि ना।
सन्तनि जा गुण सेखारियां, मनिड़ा तोखें आऊं समझायां।।

गुरुकृपा से हमें नाम मंत्र के रूप में अखुट खजाना मिला है जिसको जितना खर्च करेंगे उतना ही उत्तरोतर बढ़ता ही जायेगा. यदि हम सत्यव्रत का पालन करते हुए दीन हीन दुखियों की सेवा करके, इस अमोलक नाम मंत्र को गुरुदेव द्वारा बतायी गयी युक्ति से नाम सुमरण करके इस मानव देह में अपना कल्याण कर सकते हैं. पशु जो कि जीवित मृत दोनों अवस्थाओं में कितना उपयोगी होता है. गाय माता का उदाहरण देते हुए समझाया कि जिस प्रकार गौमाता जब तक जीती है हमें दूध गोबर इत्यादि देती है और मरने के बाद उसका चमड़ा हड्डियां तक अनेक कामों में लायी जाती हैं. और हमारी मानुषा देही? तो हमें इस मनुष्य जीवन को सफल बनाना है. सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की माता कृष्णा ने सद्गुरु महाराज को शिक्षा दी कि–

चोथों पहिंजा छदु मारे,
मन जा विकार जेई, छदि टेऊँ सभु टारे।
कहे टेऊँ धन माता, वञां तोतां बलिहार।
अमां रहिंजी कीअं ईन्दो, हीऊ सांगु फकीरीअ जो।
दुसि सुरहो कींअ थींन्दो।।

माता कृष्णा ने सद्गुरु महाराज को उपदेश करते हुए कहा कि मन के अंदर जो सांसारिक माया मोह विषयों के फुरने चल रहे हैं उन्हें मारकर एकचित्त होकर प्रभु परमात्मा के नाम का सुमरण कर. सद्गुरु महाराज ने आगे बताया कि नाम सुमरण के निरंतर अभ्यास से समस्त कष्ट क्लेश दूर हो जाते हैं. इसके लिये साधक को सत्संग श्रवण संतों का सानिध्य एवं गुरु का मार्गदर्शन आवश्यक है. इस पर संत हरिओमलाल ने बताया कि जिस प्रकार कपड़े धोते समय यदि हम सफेद कपड़े के साथ रंगीन कपड़े को डालते हैं तो रंगीन कपड़ा अवश्य ही अपना रंग सफेद कपड़े पर छोड़ता है. उसी तरह हम गुरु का संग/शरण में जायेंगे तो उनके उपदेश सत्संग श्रवण मनन का हमारे जीवन पर अवश्य ही प्रभाव पड़ेगा. पूज्य स्वामी बसंतरामजी महाराज के जीवन पर प्रकाश डालते हुए सद्गुरु महाराजजी ने कहा कि पूज्य स्वामी बसंतरामजी महाराज ने बचपन से ही सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की शरण में जाकर नाम मंत्र का दान लेकर गुरु में सच्ची लगन श्रद्धा रखीं. गुरु द्वारा बतलाये गये नाम मंत्र का सुमरण कर हजारों जिज्ञासुओं को सच्ची राह बताकर उनका रास्ता रोशन किया एवं स्वयं भी परम पदवी को प्राप्त किया. आगे गुरु महाराजने हमें समझाते हुए कहा–

जेकीं करीं सो हाणि करे वठु, वक्तु अथई वक्तु अथई।
सेवा सुमरन दान करण जो, वक्तु अथई वक्तु अथई।।

खास करण लइ आएं तूं, भागु त अहिड़ो तुहिंजो
वरी कोन थीन्दो कोन थीन्दो वरी कोन थीन्दो।
मनुष जन्म अहिड़ो वरी कोन ईन्दो कोन ईन्दो।।

हमें अंदर की आंखों से उस संसार को देखना है
हमें अपनी अन्तिम यात्रा करनी है, इसके लिये हमें अभी से
अच्छे कर्म सेवा सुमरण दान स्नान कर पुण्य कमा कर
सुमरण की पूंजी एकत्रित करनी चाहिये.–मोहन शिवनानी, अजमे

जयपुर 19 से 25 दिसम्बर

साँई टेऊँराम दोहावली राज. के पाठ्यक्रमों में शामिल करने की राज्यमंत्री द्वारा पुनः घोषणा

गुरुनगरी जयपुर के भाग्यशाली प्रेमियों का तो क
ही क्या! पूरे सप्ताह भर सद्गुरु महाराज का पावन सानि
अहा! सत्संग दर्शन की मौज का परमानन्द! पूज्य महाराजश्री
सानिध्य में श्रद्धालुओं ने इस वर्ष के अन्तिम सप्ताह का प्र
दिवस बिताया.

१९ दिसम्बर को जयपुर महानगर के बुजुर्ग
सम्मान समारोह चेटीचण्ड मेला समिति द्वारा गुरुदेव भगवान
सानिध्य में आयोजित हुआ. इसमें राजस्थान सरकार के शि
राज्यमंत्री श्री वासुदेव देवनानी ने आगामी शिक्षा सत्र की न
पाठ्य पुस्तकों में सांई टेऊँराम दोहावली शामिल करने की
घोषणा की. पूज्यश्री द्वारा जयपुर से प्रकाशित नये पा
समाचार पत्र **सिन्धी चमन** के प्रवेशाङ्क का विमोचन २४ दिस
को अमरापुर पर सत्संग सभा में किया.

पिम्परी 26 से 28 दिसम्बर

जयपुर से मुम्बई होते हुए २६ दिसम्बर को
७:३० बजे पूज्य महाराजश्री सड़क मार्ग से संत मण्डली
साथ पिम्परी आश्रम पहुंचे. जहां चल रही सत्संग सभा को
में ही पहुंचे संत हरिओमलाल सम्बोधित कर रहे थे. पूज्यश्री
दर्शन पाते ही प्रतीक्षारत प्रसन्नचित्त प्रेमीयोंने आतिशब
शहनाईवादन पुष्पवर्षा करते हुए महाराजश्री की भावभ
अगवानी की. पूज्य गुरुदेव के दर्शन सत्संग के लिये पिम
पूना निवासियों का उमड़ा सैलाब आचार्यश्री की भक्ति का
प्रताप है. सत्संग सभालय पूरा भर जाने के उपरांत सैकड़ों
संख्या में प्रेमी सड़क पर खड़े थे.

२७ दिसम्बर को प्रात: ग्वालानन्द आश्रम पहुंचे,
पर पूज्य स्वामी चेतनकृष्णजी महाराजने महाराजश्री
अगवानी की. भजन पल्लव के बाद स्वामी चन्दनप्रकाश
महाराज के स्थान प्रेम प्रकाश आश्रम पर दर्शन प्रसाद पा
वापिस पिम्परी ९:३० बजे पहुंचे. सायंकालीन सत्संग सभ

६ से ८ बजे तक संत श्रीमुक्त, संत झामनदास, संत दयाप्रकाश, संत प्रतापलाल, संत हरिओमलाल, संत लक्ष्मणदेव, संत हरीशकुमार, संत राजेशराम के बाद पूज्यश्री के श्रीमुख से प्रवाहित अमृतगङ्गा का रसास्वादन प्रेमियों ने किया. आज अहमदनगर से आये प्रेमीयों ने भी गुरुदेव का दर्शन कर सत्संग लाभ लिया.

२८ दिसम्बर को कालिन्द्री संत श्री सिद्ध ज्ञानेश्वर का मंदिर चरणपादुका स्थल व श्री सिद्ध सांई बाबा मंदिर का लौटते हुए दर्शन किया. शाम के सत्संग में आज सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का जन्मोत्सव भी मनाया गया. छप्पन भोग झाँकी के साथ राधाकृष्ण की मनोहारी झाँकी दर्शन भी प्रेमियों के उत्साह का परिचायक था. गुरुदेव के द्वारा मटकीफोड़ कर रबड़ीमलाई से सबका मुख मिठास से भर दिया गया. आम भण्डारा के साथ तीन दिवसीय उत्सव को पूर्णता दी गयी.

उल्हासनगर 29 दिसम्बर
स्वामी जयमुक्त वर्सी उत्सव

२९ दिसम्बर को प्रात: ६:३० बजे उल्हासनगर के लिये सड़क मार्ग से प्रस्थान किया गया. प्रात: १० बजे प्रेम प्रकाश आश्रम उल्हासनगर–५ पर पूज्य गुरुदेव शान्तिप्रकाशजी महाराज की तप:स्थली के दर्शन किये. प्रेमियों को सत्संग अमृत पिलाकर अल्पाहार प्रसाद पाकर उल्हासनगर–३ ५र स्थापित श्री प्रेम प्रकाश आश्रम माता मीरादेवी के यहां पहुंचे. यहां पर पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्दजी महाराज भी पधारे. दोपहर ११:३० से १ बजे तक सत्संग की मौज उल्हासनगर वासियों ने गुरुदेव संतों के सानिध्य में लूटी. भोजनप्रसादी पाकर उल्हासनगर–३ में राजेश कैसिट वाले के निवास पर आये. यहां पर खैरथल आश्रम के संत जयमुक्तजी महाराज की पुण्यतिथि मनायी गयी. यहां के सत्संग समारोह का सीधा प्रसारण उल्हासनगर के सभी कैम्पों में किया जा रहा था. स्वामी ग्वालानन्द आश्रम में भी दर्शन सत्संग का लाभ देकर रात्रि को ९ मोटर गाड़ियों के काफिले में सद्गुरु महाराज जी खार मुम्बई आश्रम पहुंचे.

मुम्बई 30 दिस. से 6 जनवरी 2006 तक श्री प्रेम प्रकाश मंदिर का वार्षिकोत्सव

पूज्य सद्गुरु महाराजजी के परम सानिध्य में देश विदेश से आये ६०० से अधिक भाग्यप्रवर भक्तों के साथ मुम्बई के श्रद्धालुओं ने ३१ दिसम्बर की अर्धरात्रि तक चले विशेष भजन सत्संग में वर्ष २००५ को विदाई देकर नये वर्ष का स्वागत किया.

प्रेम प्रकाश मंदिर खार मुम्बई की स्थापना पूज्य सद्गुरु स्वामी हरिदासरामजी महाराज द्वारा सद्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज की इच्छा के दृष्टिगत करवायी गयी. जिसकी स्थापना का वार्षिक महोत्सव प्रतिवर्ष १ से ५ जनवरी तक मनाया जाता है. इस वर्ष भी वार्षिकोत्सव पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज की पावन अध्यक्षता में संत मण्डली के सानिध्य में मनाया गया. संत शिरोमणि पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्दजी महाराज, स्वामी मनोहर प्रकाशजी महाराज, स्वामी जयदेवजी, संत हरिओमलालजी, संत दयाप्रकाशजी, संत प्रतापलालजी, संत झामनदासजी, संत नरेशलाल (इंदौर) के अतिरिक्त अमरापुर का विद्यार्थी मंडल भी सम्मिलित हुआ.

1 जनवरी 2006: वार्षिक महोत्सव की पूर्व संध्या पर ही प्रेम प्रकाश मंदिर खार में देश विदेश के विभिन्न शहरों से आये हुए संत–महात्मा, गुणीजन, विद्वान, भगत, कव्वाल व भक्त पहुंच कर गुरुदर्शन के लिये लालायित हो उठे. जैसे शहद के ऊपर मक्खियां, बसंत में फूल के ऊपर भंवरे गुञ्जार करते हैं. क्यों न हो गुरुमुख रूपी भंवरों के लिये मेले का मौसम बसंत ऋतु ही तो होता है. हमारे गुरुदेव तो शहद से भी मीठें हैं. इसीलिये तो कहा गया है– **माखीअ खां वधि मिठिड़ो आहे, अहिड़ो बियो को नाहे।** तो जिस प्रकार शहद के छत्ते में विभिन्न फूलों के रस का समागम होता है, उसी प्रकार मुम्बई मेले में भी विविध संतों व भक्तों की अमृतरस का समागम हुआ. तो आइये हम सबभी उस अमृतका सार मुम्बई मेलेका अवलोकन करते हुए ग्रहण करें–

1 जनवरी– २००६ की शुभ्र वेला में प्रात:काल चार बजे उठकर स्नान कर श्रीमंदिर व श्री गुरुदेव के दर्शन कर संतों सेवाधारियों प्रेमियों ने नववर्ष की एक दूसरे को शुभकामनाएं देकर, सत्संग हाल में बैठते गये. जहां ७:३० बजे इस महोत्सव की पहली विशेष सत्संग सभा का शुभारम्भ प्रार्थना गायन से हुआ व गुरुदेव के आशीर्वचनों से सभा का समापन हुआ. सत्संग के बाद पांच आरतियों का गायन व पञ्चदिवसीय पाठों का आरम्भ हुआ.

इसके पश्चात् वैदिक विधि से हवन यज्ञ हुआ. झण्डा फहराने के बाद तो प्रेमीगण झूमने नाचने लगे.

सायंकालीन सत्संग का कार्यक्रम लोकहित कुटीर रोड नं. १६ पर आयोजित था. पहले विभिन्न शहरों से आयी माताओं ने भजनानन्द कराया. प्रथम दिन ही सत्संग हॉल खचाखच भरा हुआ था. सभा के अंत में सद्गुरु महाराज ने अपने सारगर्भित वाणी में अमृत बरसाते हुए कहा– मन का स्वभाव है चञ्चलता और उसका विलोम है अचलता. कैसा भी जड़बुद्धि क्यों न हो. अभ्यास से सब संभव है. अभ्यास भी

नियम से होना चाहिये. पांच मिनट का नियमित अभ्यास एक घन्टेके अनियमित अभ्यास से अच्छा है. अगर नियम को आधे में छोड़ देंगे तो आधे में रह जायेंगे और अगर नियम को पूरा करेंगे तो पूर्णता को प्राप्त होंगे. इस तरह नियमित जीवन जीने की कला सिखलाकर आरती पल्लव के साथ आज की सभा का समापन हुआ.

2 जनवरी: पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार प्रातःकालीन सत्संग की मौज मंदिर के सत्संग प्राङ्गण में ही हुई. सायंकालीन सत्संग सभा लोकहित कुटीर पर बनाये गये विशाल सत्संग पण्डाल पर सम्पन्न हुई. हजारों की संख्या में उपस्थित श्रद्धालुओं को जयपुर से आयी **दादी चेता** ने **अदियूं मुहिंजी दिलिड़ी लगी जोगिनि सां** व अजमेर से पधारे भगत शंकरलाल नारवानी ने **मुंडीअ जी टिक भली, स्कूटर जी किक भली, माण्हुअ जी लक भली, संतनि जी सिक भली, गुरुअ जी छिक भली** गाकर भजनानन्द कराया. पूज्य **स्वामी ब्रह्मानन्दजी महाराज** ने ओजस्वी वाणी में अमृत पिलाते हुए कहा– **पढ़ायो प्रेम सां सत्गुर, अखरु मूंखे**. उन्होंने कहा कि नववर्ष में हम यह संकल्प करें कि हम अभी से अपने मन से नकारात्मक विचारों को निकाल देगें, केवल सकारात्मक विचारों के द्वारा मन की दशा को सुधारेंगे.

Guru Darshan On Mobile: मोबाईल फोन के लिये लगभग ३० भजन व गुरुदेवों के स्वर की सीडी का विमोचन गुरुओं की वाणी के मध्य सद्गुरु भगवान व संतों के करकमलों से किया गया.

अंत में गुरुमहाराज ने मृदुलवाणी से अमृत वर्खा करके प्रेमियों के हृदय प्रेमामृत से भर दिये.

3 जनवरी: प्रातःवेले की प्रार्थना पश्चात् **संत श्रीमुक्त** ने **दुख दर्द करो सब दूर, शरणागत मैं तेरी**, भीलवाड़ा के **संत झामनदास** ने **सतगुर तुहिंजे दर ते, असीं आहियूं भिखारी, सत्संग का सुधरिया भला, ऐसे कागज टाट का, रज्जब गुरु प्रसाद ते मिट गया अंग ललाट का.**

प्रेम प्रकाश आश्रम माहीम में सत्संग की धूम

प्रेम प्रकाश मंदिर माहीम (जहां पर हमारे प्यारे सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज ने अपने जीवन के अन्तिम प्रवचन किये थे) के नवीनीकरण पश्चात् प्रतिवर्ष ३ जनवरी को विशेष सत्संग समागम व भण्डारे का आयोजन किया जाता है. सत्संग सभा में मुरैना के **संत प्रतापलालजी** ने आचार्यश्री बाबा टेऊँरामजी महाराज की सेवा भावना व गुरुनिष्ठा का उदाहरण देते हुए कहा कि एक बार सद्गुरु महाराज स्वामी उधवदासजी व स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज व अन्य संतों के साथ रटन करके लौट रहे थे तो रास्ते में मालूम पड़ा कि दादा आसूरामजी महाराज का स्वास्थ्य ठीक नहीं है. उन्होंने संतोंसे कहा कि आप टण्डेआदम चलो मैं नवां हाल गुरुदेव का कुशलक्षेम समाचार पूछकर आता हूं, इसपर कहा कि हे त्रिलोकीनाथ! हमें भी आज्ञा करें कि हम भी साथ चलें तो आचार्यश्री ने कहा– कि नहीं! अगर आ चलोगे तो आप सेवा में लग जाओगे. और सेवा मैं अपने से करूंगा. ऐसे गुरुभक्त सेवानिष्ठ थे हमारे बाबा टेऊँ महाराज.

सत्संग सभा की पूर्णाहुति में **सद्गुरु महाराज** मन की स्थिति को समझाते हुए बताया कि मन को विषय विष पिलाना छोड़कर सुमति सीखकर नामरूपी अमृत पि संसार के सुखों की स्मृति में न रहें. बल्कि भगवन्नाम में रहें. हम भाग्यशाली हैं जो हम सबको आचार्य सद्गुरु टेऊँरामजी महाराज की शरण मिली है. जिन्होंने स्वय भवसागर से तर कर अनन्त जीवों को पार कराया. दादा हे जो इस मन्दिर व्यवस्था सेवा देखते हैं, के स्वास्थ्य ला लिये पल्लव पाकर माहीम महोत्सव का समापन तत्पश्चात् गुरुदेव भगवान के साथ संतों व गुरुमुखों ने की भोजनप्रसादी पायी.

सायंकालीन सत्संग सभा जो कि लोकहित कुटी थी में हिसार से आयी **माता रामप्यारी** व डीसा गुजरात से **दादी राधा** ने गुरुमहिमा का भजनों के माध्यम से बखूबी किया. तत्पश्चात् **लखमीचन्द कव्वाल** जो कि कोटा से अ ने नाचते झूमते हुए **ऊहा धरती वदी महान आ, जिते टेऊँराम जो स्थान आ** भजन गाकर सारी संगति की वाह फिर उनके सुपुत्र **भरतकुमार** ने शंकर भगवान का वेष धार कैसेट में बज रही शिवस्तुति पर मनोहारी नृत्य किया. बाद **स्वामी मनोहरप्रकाशजी** ने बड़े ही सुरताल लय के संगीतमय वाणी में सत्संगियों को मंत्रमुग्ध करके झूम मजबूर कर दिया.

सुख के सारे साधन हैं, पर मन को चैन न आए.
ये मन मस्ताना, पागल दीवाना, भीतर तनिक न झांव
पर अपनी ही होके ज्यों ज्यों सुख के पीछे भागे,
हमेशा ही दुख पाए।।

अंत में **सद्गुरु महाराज** ने सर्व शास्त्रों के स समझाते हुए कहा–

जीव जोगिनि सां जुड़ियो, मंड मुहब्बत जो मढ़ियो।
मिठा कीन लगनि मिट बिया, साह सारे सांगिनि खे।।

अगर हम एक का ही आधार लेंगे तो संसार रूपी भवसागर से पार तर जायेंगे. इस बात को उदाहरण के द्वारा सरलता के साथ समझाया कि जिस प्रकार पानी प्राप्त करने के लिये एक ही जगह गड्डे को खोदते जायेंगे तो पानी अवश्य मिलेगा, मगर जगह जगह खड्डे खोदेंगे तो पानी नहीं मिलेगा. ठीक उसी प्रकार एक भरोसा एक बल, एक आस विश्वास एक जगह मन को स्थिर करने के लिये गुरु महाराज ने आज ही नया भजन रचकर इस बात को स्पष्ट किया–

हिक हन्ध जो धरती खोटे, तहिंखे मिले थो पाणी।
हर हन्ध हणिज न हथिड़ा, करि तूं पुकार हिक सां।।
बणु दास हिकिड़े दर जो, गढिं दिलि जी तार हिक सां।
सन्मान कर सभिनि जो, पर रखु तूं प्यार हिक सां।।

परमात्मा का एक लक्षण है निश्चल, हम अपने मन को परमात्मा के मन से मिलायेंगे तो हमारा मन भी निश्चल हो जायेगा. सद्‌गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज के समय से ही ऐसी परम्परा चली आ रही है कि उन्होंने अपने गुरु आसूरामजी महाराज का आधार लिया फिर स्वामी सर्वानन्दजी महाराज स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज व स्वामी हरिदासरामजी महाराज ने सद्‌गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज का आश्रय लेकर परम पदवी को प्राप्त किया. हम भी उनके पदचिह्नों पर चलकर अपना कल्याण करेंगे. इसी आशीर्वाद के साथ आज की सत्संग सभा का विराम दिया गया.

4 जनवरीः प्रातःकालीन प्रार्थना गायन के बाद इन्दौर से पधारे **संत नरेशलाल** ने खार मुम्बई आश्रम का इतिहास बताया कि किस प्रकार सद्‌गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज की इच्छा को सद्‌गुरु स्वामी हरिदासरामजी महाराज से आज्ञा लेकर भक्त डॉ. चैनानी व गोपालदास ने निर्माण कराया, जहां आज हजारों प्रेमी आकर संतों व सद्‌गुरु महाराज का दर्शन सत्संग पाकर अपना भाग्य उज्जवल कर रहे हैं. अन्य संत महापुरुषों के बाद सद्‌गुरु महाराज ने सीधी सरल भाषा में कहा–

हीरो जन्म न हार, मूरख मति भरम रे।
मिली साध संगति सां, साझुर पाण संभार।।
काल अची सिर ओचिते, कुही कन्दुइ कार।
पो कीअ तरन्दे तार, सिज लथे सामी चवे।।

आचार्यश्री अपने मन को समझाते हुए कह रहे हैं कि समय को प्रभु के चिन्तन में सफल करेंगे तो वह हमें परम पिता परमात्मा से मिलायेगा और अगर समय को संसार के व्यर्थ की बातों में गंवायेंगे तो वही समय हमें चौरासी के चक्कर में उलझा देगा. जैसे अगर हमने कपड़े नहीं धोए और मैले ही छोड़ दिये तो कल हमें उतने ही मैले कपड़े मिलेंगे. उसी तरह इस जन्म में आकर हमने संतों के संग में आकर मन की मैल को न धोया तो अगले जन्म में भी वही स्वभाव वही संस्कार मिलेंगे.

साथी तेरे चल चल जाते, तुम भी चलने हारा जी।
कूड़ कपट कर पाप कमाया, भार उठाये भारा जी।।
संत दास गोविन्द भजन बिन, मूर गंवाए सारा जी।।

देवदुर्लभ मानुषे चोले को सफल करने के सरलतम साधन को समझाकर पल्लव पाकर इस सत्संग को पूर्ण किया.

सत्संग के पश्चात् सद्‌गुरु महाराजजी संत मण्डल एक बहुत ही पुराने प्रेमी श्री गोरधनदास टहलरामानी के निवास पर चरण पखारने गये. यहां पर उस प्रेमी ने बताया कि कराची में बाल्यकाल में उनके जनेऊ संस्कार कार्यक्रम सन् १९३४ में दादा सांई आसूराम जी, सद्‌गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज, स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज, स्वामी गुरुमुखदास जी महाराज, स्वामी प्रेमदासजी, स्वामी निर्मलदासजी व अन्य कई संत महात्माओं ने पधारकर आशीर्वाद दिया था. उस समय का खींचा हुआ फोटो भी सभीको उन्होंने दिखाया.

4 जनवरीः आज की सायंकालीन सत्संग ज्ञानगङ्गा की शुरूआत उल्हासनगर से आयी **दादी मीरा** के भजन से हुई. जिसमें उन्होंने **जदहिं कृपा करे गुरु ईन्दा, पूरियल दरड़ा पयन्दा, हीय आश अन्दर में आहे. भगत दिलीपकुमार** भावनगर से पधारे ने पैरों में छेज पहनकर नृत्य करते हुए **बेड़ी मुहिंजी पार लगाइ, मुहिंजा कामिल यार मल्लाह. सांई मूंखे दे, हाणे जो हाणे दे, माफी दे माफी** गाकर मौज मचायी. इनके पश्चात् उल्हासनगर आश्रम से आये **डॉ. दयाल आशा** ने **ओ मुखां कीन विसरनि, सतगुर सुंहारा, प्रीतम प्यारा, अखिड़िनि जा तारा** जैसे ही उन्होंने यह भजन गाया उनकी आंखों से गुरुदेव के प्रति श्रद्धा के प्रेमाश्रु निकल पड़े. तत्पश्चात् पूज्य **संत जयदेवजी** ने नये सालके मौके पर स्वरचित नया भजन सुनाया–

आते हैं आते हैं गुरु के दर–2,
जो भी प्रेम से, नित नेम से,
प्रेमिनि के काज संवारे–2, दुख दर्द निवारे–2।।
सतगुर के दर जो भी प्रेमी आते हैं–2।
आकर गुरु चरणों में शीश निवाते हैं–2।।
गुरु देवों के देव हैं, देखे जाने जो–2।
गुरु पीरों के पीर हैं, ऐसे माने जो–2।।

तिनके काज संवारे-2, काज संवारे, दुख दर्द निवारे।
मतां समझीं गुरनि में का घटि आहे,
घटि तुहिंजी सज़ण तो वटि आहे।।

अंत में **परम पूज्य सद्गुरु महाराज** जी ने गुरु महिमा की व्याख्या करते हुए कहा–

सदाई कुरबान वञां, तहिंजे नाम तां।
जहिं पियारे प्रेम रस, दिनो आत्मज्ञान।।
रहयो न रतिअ जेतिरो, अन्दर में अभिमान।
सामी सब जहान, सामाणो स्वरूप में।।

मन अगर समझ जाए तो पल में बेड़ा पार हो जाए और अगर नहीं समझे तो जन्म बीत जाय. तो इसके लिये सत्संग श्रवण व मनन, सत्शास्त्रों का अध्ययन व नाम का जाप करेंगे. मन में मृत्यु का भय होगा तो गुरुकृपा स्वत: ही होगी.

5 जनवरी: आज की प्रात:कालीन सत्संग सभा परम्परानुसार प्रार्थना गायन से शुरू हुई. आज की सत्संग सभा में ग्वालियर से पधारे **संत हरीओमलालजी** ने **जे चाहो कल्याण, धरो हरि का ध्यान, सुनो सुनो ऐ सुजान** भजन के माध्यम से हरि के ध्यान द्वारा मन को शान्त करने की युक्ति बताई. साथ ही संतों के वचन पर अमल करने की बात भी बताई **मात पिता गुरु संत की बानी, बिना विचार करिए शुभ जानी. पूज्य गुरुदेव भगवानने** अमृतवाणी की वर्खा करते हुए कहा–कि आज महोत्सव का अन्तिम दिन है.

दर्शन लइ दर दर ते दिलबर, तो लइ मां त पुकारियां।
वाट निहारे नेण थकी पिया, आब अखिन मां हारियां।।

सांसारिक पदार्थों की चाहना मन से निकालकर प्रभु मिलन की प्यास मन में जगानी है. इस मार्ग में काम, क्रोध, लोभ, मोह व अहंकार बाधक हैं, अगर इनको सही दिशा में मोड़ देगें तो ये ही हमारे सहायक बन जायेंगे. जैसे क्रोध करना है तो अपनी दुष्प्रवृत्तियों पर, लोभ करना है तो सत्गुरु का सानिध्य प्राप्त करने का, मोह करना है तो नाम स्मरण का. इस प्रकार अगर सांसारिक पदार्थ मांगेगें अथवा नहीं मांगेगें तो भी प्रारब्ध अनुसार उतने ही मिलेंगे. निष्काम कर्म भक्ति करेंगे तो गुरुदेव हमें अनमोल वस्तु देंगे. महाराजश्रीके प्रवचनों के पश्चात् पाठों के भोग हुए.

सायंकालीन समापन सत्संग सभा में विभिन्न शहरों से आयी मण्डलियों ने गुरु महिमा के गायन से भजनानन्द की ऐसी धूम मचायी कि सारा वातावरण गुरुभक्ति से ओतप्रोत हो गया. विदेशसे आये प्रेमी भक्तों हांगकांगसे आये **कविता-गोपालदास** दुबई से पधारी **शंकरलाल होतचन्द मनवानी** की सुपुत्री **दीक्षा, डिम्पल** स्पेन से आये **खुशीराम-बिन्दु,** अमेरिका की **कम** **चैनानी** ने भी भजन गायन से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया. ख आश्रम के व्यवस्थापक **संत हेमन्त** ने **स्वामी टेऊँराम बा आहियूं तुहिंजी शरण में,** स्वामी ग्वालानन्द आश्रम के स्वा **चेतनकृष्ण** जी महाराज ने **सतगुर मुहिंजो आहे महान, टेऊँ स्वामी ग्वालाराम, सतनाम साक्षी सभिनि खां सुठो आ,** पु **भलु उन्हनि खां, जिनि दिठो आ** भजन गायन से गुरुदेव महिमा को बताया. खार मंदिर के वार्षिक महोत्सव के उपल में डॉ. अशोक चैनानी ने सारी संगत, सेवाधारियों, संतों नयनों के दुलारे, प्राणों से प्यारे श्री सत्गुरुदेव भगवान का वि से आभार व्यक्त करते हुए कहा–Round East C West, Found Swami Teunram The Bes Most Welcome Year The Next. महोत्सव अन्तिम उपदेश में **गुरुदेव भगवान** ने सद्गुरु की अन्तिम कृ का सकारात्मक भाव से सहृदय प्रेमियोंको पक्का विश्वास दिला कि–

सत्गुरु अपने दास का लेखा देत निवार।
कहे टेऊँ परलोक तिस, कोय न पूछनहार।।

भक्त प्रहलाद ने नरसिंह भगवान से यही वरदान मां था कि मेरे मन की कामनाओं का बीज समाप्त हो जाए. तो ही वरदान आज हम सब मिलकर सत्गुरु स्वामी टेऊँरामः महाराज से मांगते हैं, आज चौथ का दिन भी है आचार्यश्री अवतार धारण करने का दिन, स्वामी सर्वानन्दजी महाराज अवतरण व ब्रह्मलीन होने का दिन गुरुवार इस मेले की समा का दिन है तो अब समय हुआ है पल्लव का. और इसीके स पल्लव पाकर महोत्सव का समापन किया गुरुदेव भगवान ने.

६ जनवरी की अर्धरात्रि को श्री गुरुदेव भगव मनीला की यात्रा के लिये रवाना हुए. पूज्यश्री के साथ स हरिओमलाल, संत लक्ष्मणलाल, संत हरीशलाल फिलीपीन्स गये हैं.

मुम्बई मेले की खास बातें

१. जयपुर से प्रथम बार ४०० भक्तों का आगमन.

२. देश विदेश के विभिन्न शहरों जयपुर,इन्दौर,आगरा,पू पिम्परी,ग्वालियर,कानपुर,बड़ौदा,गोन्दिया,सिवनी,नागपुर,हिस पलवल,मुरैना,अजमेर,दिल्ली,अमरावती,रायपुर,धुलिया,कोल गांधीधाम,मद्रास,भीलवाड़ा,इलाहाबाद,केकड़ी,भावनगर,उल्ह नगर व विदेशों दुबई,हांगकांग,स्पेन,अमेरिका,सिन्ध आदि भक्तप्रेमी, कविजन, गुणीजन, विद्वत्जन पधारे.

४. पूना, पिम्परी उल्हासनगर से प्रतिदिन सैकड़ों की संख्या सत्संग में भाग लेने के लिये आना जाना.

ाबा टेऊँराम की अद्भुत् शक्तियाँ-२ सर्व शक्ति के आधार साँई टेऊँराम बाबा

बाबा टेऊँराम की महिमा कितनी अपार है, कोई नहीं समझ सकता. हम सब तो तुच्छ प्राणी हैं. बाबा के पास जो जैसी ोकामना लेकर आया, वो खाली नहीं लौटा. आज तक लाखों की संख्या में श्रद्धालु बाबा के दरबार पर पहुचते हैं. सबकी अपनी पनी मनोकामनाएं! संसार के पदार्थों की चाहना से हम सब खुश! कोई विरला माँगता है प्रेम, भक्ति, विश्वास, पूजा--पाठ! सबको त्र संसारके पदार्थों की कामना! कोई धन, कोई पुत्र, कोई सुख–शान्ति! और बाबा हरएक की मनोकामना पूर्ण करते हैं. बस! ावश्यकता से अधिक न हो? मन में लालच न हो, योग्य देख सबको दे देते हैं सब कुछ हमारे बाबा टेऊँरामजी!

रात्रिकाल का समय था. आया एक रोज कमाकर रोज आटा दाल लाकर खाने वाला भक्त! मन में सच्चा भाव था! आर्थिक थति कमजोर! इतना कमाता कि दिन भर का दो समय का भोजन ही मिल पाता. चक्की चलाकर आटा पीसता! सामान्य जीवन र्वाह करता! समय पलटा, चक्की मशीन खराब हो गयी. मन में क्षोभ! चिन्ताके बादल मंडराये! कैसे होगा अब मेरा गुजारा! इतने े नहीं कि मैं चक्की मशीन बनवा सकूं. ऐसा भाव लेकर बाबा टेऊँराम के दरबार रात्रिकाल में आ पहुंचा. मन में करुणा भाव और च्चे हृदय की पुकार! भावविह्वल! गेट पर तेज स्वर में बोला! अरे! ओ! टेऊँराम बाबा! मुझ गरीब की पुकार सुन! मेरी चक्की नहीं ली तो मैं परिवार सहित भूखा ही रह जाऊंगा. मेरी स्थिति ऐसी नहीं जो मैं चक्की बनवा सकूं. ऐसी करुण पुकार दरवाजे पर ही कर ा था! अंत में जाते समय बाबा को अपना समझ कर कहता गया! अरे बाबा! अगर कल तक मेरी चक्की न चली तो तेरी दरबार भी हीं चलेगी! ऐसा भाव रखकर चला गया दुखी भक्त अपने घर. सर्वशक्ति के मालिक बाबा ने सुन ली उस अनोखे भक्त की पुकार! बा की अपार कृपा से प्रातःकाल भक्त ने चलाई अपनी चक्की. देखा बाबा का अनोखा चमत्कार! प्रसन्न होकर नाचने लगा. बस! श्वास और दृढ़ हो गया. और कोई सुने या न सुने, पर बाबा टेऊँराम सबकी मनोकामनाएं पूर्ण करते हैं. आज वह भक्त नित्यप्रति बा टेऊँराम दरबार श्री अमरापुर स्थान के दर्शन करता है.

ोक समाचार प्रीतमदास नहीं रहे

दावनः स्वामी शान्तिप्रकाश सेवा धाम वृन्दावन के वस्थापक श्री प्रीतमदासजी २३ दिसम्बर को अमरापुर धाम धारे. श्री प्रीतमदास जी के सम्मान में उल्हासनगर आश्रम र २६ दिसम्बर को श्रद्धाञ्जलि सभा पूज्य स्वामी देवप्रकाश ो महाराज के सानिध्य में सम्पन्न हुई. सद्गुरु महाराजकी ोरसे संत दयाप्रकाश जी व दादा द्वारकादासजी इसमें म्मिलित हुए.

लनाः सद्गुरु महाराज के पुराने प्रेमी श्री जाड़ामल जी ८५ र्ष की आयु में अपनी यात्रा पूरी कर २७ दिसम्बर को द्गुरु भगवान के श्रीचरणों में अमरापुर धाम सिधारे.

धपुरः प्रेम प्रकाश मण्डली जोधपुर के प्रमुख कार्यकर्ता श्री ठानन्द लालवानी की माता श्रीमती राधादेवी लालवानी पनी यात्रा पूरी कर अमरापुर धाम सिधारीं.

हानपुरः आश्रम के सेवा कार्यों में बढ़चढ़ कर भाग लेने ली माता प्रेमप्रकाशी सुशीलादेवी पत्नी अमरापुरवासी श्री मरलाल भोजवानी ६२ वर्ष की आयु पूर्ण कर गुरुदेव के वन श्रीचरणों में २८ दिसम्बर अमरापुर धाम सिधारीं.

प्रेम प्रकाश संदेश परिवार गुरुदेव भगवान से वंगत आत्माओं को अपने चरणों में स्थान देने की प्रार्थना रता है.

राजस्थान पत्रिका के कैलेण्डर में साँई टेऊँराम जयंती

भारत का प्रमुख समाचार पत्र राजस्थान पत्रिका. जिसका प्रकाशन राजस्थान, दिल्ली, चैन्नई, कोलकत्ता, बैंगलोर, अहमदाबाद, सूरत आदि महानगरों से होता है. पत्रिका द्वारा वर्ष २००६ का नया कैलेण्डर वितरित किया गया है. जिसमें १ जुलाई २००६ को साँई टेऊँराम जयंती दर्शायी गयी है. सुधी पाठकगण पत्रिका के कैलेण्डर में साँई टेऊँराम जयंती देख सकते हैं. इसके लिये राजस्थान पत्रिका के संस्थापक एवं सम्पादकीय समूह को साधुवाद एवं गुरु महाराज का आशीर्वाद.

इन्दौर आश्रम पर मधुमेह जाँच शिविर लगा काटजू कॉलोनी स्थित स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम पर १८ दिसम्बर को संत शम्भूलाल के प्रयासों से मधुमेह जाँच शिविर का दूसरी बार आयोजन किया गया. शिविर में डॉ. उमेश मंसद द्वारा १५० से अधिक लोगों की जाँच की गयी, मधुमेह से पीड़ित लोगों की पहचान कर उनको उपचारार्थ उपयोगी जानकारी दी गयी.

इन्दौर शहर के लिये नये प्रतिनिधि की नियुक्ति

इन्दौर शहर के हमारे प्रतिनिधि श्री राजू के. ठकुरेल के विदेश जाने के कारण अब उनके स्थान पर संत शंभूलाल की अनुशंसा पर श्री विशाल आरतराय सभागचन्दानी, १४९, पंडीया कॉम्पेलक्स, सियागंज, मेन रोड, इन्दौर जिनका फोन नं. दुकान २४३५८८३ व घर २१०१२०८ है को प्रेम प्रकाश संदेश के इन्दौर व समीपस्थ क्षेत्रों के लिये प्रतिनिधि नियुक्ति किया गया है.

आध्यात्मिक ज्ञानवर्धक प्रश्नावली-23

प्र.१ प्रेम प्रकाशियों का मूल मंत्र क्या है ?

उ. ....

प्र.२ यह जीव किसका अंश होने के कारण सतचित् आनन्द का रूप है ? (दिसम्बर अंक के अनुसार)

उ. ....

प्र.३ दिसम्बर अंक के पृष्ठ ६ के आधार पर कौन सा जागृति सन्देश दिया गया है ?

उ. ....

प्र.४ बाबा टेऊँराम का जन्मदिवस वर्ष २००६ में कितनी बार मनाया जायेगा ?(दिस. अंक के आधार

उ. ....

प्र.५ टेऊँ दीपक ज्ञान बिन.......... सांई टेऊँराम दोहावली को पूरा करो ?

उ. ....

प्र.६ साक्षी चेतन रम रहा............शान्ति के दोहे को पूरा करो ?

उ. ....

प्र.७ मरे हुये कुत्ते को उठाने के लिये मेहतरानी कितने पैसे मांग रही थी ?
(सांई टेऊँराम बाबा की लीला चित्रकथा को पढ़ें)

उ. ....

प्र.८ सुनामी पीड़ितों के लिये कौनसा व कहाँ स्कूल खोला गया है ?

उ. ....

प्र.९ वर्ष २००६ में किस युगपुरूष का शताब्दी महोत्सव मनाया जा रहा है ?

उ. ....

प्र.१० वर्ष २००६ में सांई टेऊँराम बाबा का चौथ महोत्सव कितनी बार मनाया जायेगा ?

उ. ....

आध्यात्मिक ज्ञानवर्धक प्रश्नावली-२२ के सही उत्तर(१) श्री अमरापुर स्थान जयपुर में (२) ब्रह्मनिष्ठ सद्गुरु टेऊँरामजी महाराज क महाप्रसाद ढ़ोढा चटनी का भोग (४) ४० दिन तक दीप जलाना, शनिवार व्रत करना, ढ़ोढ़ा चटनी प्रसाद का भोग लगाना, समाधि स्थल नाम-जप व गुरु मूरत के दर्शन करना (५) नर तन के द्वारा भगवत् दर्शन व मुक्ति मिलती है (६) एक और गुरुदेव हो, दूजे सब संसार गुरु को अधिक लख नित-नित करो जुहार. (७) सद्गुरु टेऊँरामजी महाराज का (८)चोरासी लख योनि का, मानुष है सिरताज (९) श्र प्रकाश विश्रामगृह, श्री अमरापुर स्थान जयपुरमें (१०) गुरुको कर तुम वन्दना, श्रद्धा मन में धार. कह टेऊँ इस जगत में, पाय पदार्थ चा

परम श्रद्धेय संत शिरोमणि त्यागी तपस्वी संत स्वामी गणेशानन्दजी महाराज का १०५ वाँ जन्मोत

23 फरवरी गुरुवार से — कार्यक्रम — 27 फरवरी सोमवार 2006 त

गुरुवार 23 फरवरी 2006	प्रातः 5 बजे आश्रम से हरिनाम संकीर्तन प्रभातफेरी निकलेगी तत्पश्चात् आरती होकर श्रीमद्भगवत्गीता, श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ साहब का पाठ आरम्भ होगा. सायं 5 से 7:30 तक स
शुक्रवार 24 फरवरी 2006	प्रातः 8 से 10 बजे तक सत्संग जनेऊ संस्कार सायं 4 बजे सड़क मार्ग से अमरापुर वाहन द्वा श्री गुरुवर संतमण्डली सहित पधारेगें. सायंकाल सत्संग 5 से 7:30 बजे तक.
शनिवार 25 फरवरी 2006	प्रातः 8 से 10 बजे तक सत्संग सायं 5 से 7:30 बजे तक सत्संग.
रविवार 26 फरवरी 2006	महाशिवरात्रि पर्व जन्मोत्सव उपलक्ष में प्रातः 6:30 से 10:30 बजे तक हवन,सत्संग, ध्वजावंदन सायंकाल 5 से 7:30 बजे तक सत्संग, जन्मोत्सव के उपलक्ष में दीपोज्वलन.
सोमवार 27 फरवरी 2006	प्रातः 8 से 10:30 बजे तक सत्संग, पाठों का भोग, आरती एवं आम भण्डारा होगा. सायंकाल से 7:30 बजे तक सत्संग, आरती होकर पल्लव पाकर उत्सव का समापन होगा.

आयोजन स्थल : स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम
श्री महारूद्र मण्डल स्कूल के पीछे, गाढ़वे की गोठ,
लश्कर, ग्वालियर (म.प्र.) दूरभाष- 0751-2426111

सेवा में : सन्त हरिओम, माता ला
प्रेम प्रकाश आश्रम ट्रस्ट

आध्यात्मिक वर्गपहेली-26

1		2		3	ॐ	4	
	ॐ		ॐ	5			ॐ
6	7		ॐ		ॐ	8	
ॐ		ॐ	9	ॐ	10		ॐ
ॐ	ॐ	11			ॐ	12	
13				ॐ	14		ॐ
	ॐ		ॐ	ॐ	15		16
17				ॐ		ॐ	

आध्यात्मिक वर्गपहेली-25 के सही हल

1 सं	दी	2 प	3 न	ॐ	4 न	न्दी	ॐ
जी	ॐ	5 व	र	रु	चि	ॐ	6 च
7 व	च	न	ॐ	ॐ	8 के	व	ट
नी	ॐ	ॐ	9 सु	जा	ता	ॐ	नी
ॐ	10 शा	र	दा	ॐ	ॐ	11 ह	ॐ
12 अ	न्त	ॐ	13 मा	द्री	ॐ	14 वि	15 प्र
16 भा	नु	17 जा	ॐ	ॐ	18 कृ	ॐ	धा
व	ॐ	19 प	ति	त	पा	व	न

प्रस्तुति : सुधा जौहरी, तिलक नगर, जयपुर

बाएँ से दाएँ :

१. इन स्वामीजी की जन्म शताब्दी श्रावण पूर्णिमा बुधवार ६ अगस्त ०६ को मनाई जाएगी. (५)

४. सात तारों का समूह,........ऋषि मंडल. (२)

५. जमा राशि, आमदनी से बचाया हुआ धन. (३)

६. पुत्र; पवन.....संकट हरण मंगल मूरत रूप.(३)

८. ......भोजन वसन की टेऊँ करते काहिं. हरि विश्वम्भर दे सबहिं, क्या तुम देवहिं नाहिं.. (२)

१०. हनुमान व अंगद लंका में राम के.....बन कर गए. (२)

११. भए.....कृपाला दीनदयाला, कौशल्या हितकारी; सामने आना. (३)

१२. शरीर के भीतर का दिव्य रूप जो अजर-अमर है. (२)

१३. वन, जहाँ की पर्णकुटी में सीता ने स्वर्णमृग देखा. (४)

१४. सागर-मंथन के पश्चात् शिव ने हलाहल...किया; पिया.(२)

१५. विनय-पूर्वक ईश गुणगान करना. (३)

१७. गणपति; गणेश. (४)

ऊपर से नीचे :

१. चिरंतन; जो सदा से हो. (३)

२. वह प्राकृतिक प्रकोप इसमें सब कुछ नष्ट हो जाता है. (३)

३. भीलनी जिसने श्रीराम को जूठे बेर खिलाए. (३)

४. इन्हीं तीन शब्दों का मेल है सच्चिदानन्द. (२.२.३.)

७. पुण्यात्मा स्वर्ग में जाते हैं और पापी.......में. (२)

६. लक्ष्मण के तीर से नाक कटने के कारण शूर्पनखा.......हो गई. (३)

११. सत्संग आदि में दिया जाने वाला ज्ञान व शिक्षा का उपदेश. (४)

१३. ज्योतिष का कलैंडर. (३)

१४. क्षिति, जल......गगन समीरा, पाँच में से अग्नि तत्व. (३)

१६. ब्रह्मा का जन्म श्री विष्णु की........ से हुआ. (२)

आध्यात्मिक वर्ग पहेली-25 व आध्यात्मिक ज्ञानवर्धक प्रश्नावली-22 के सही हल भेजने वालों के नाम

मरापुर जयपुर से-प्रेम प्रकाशी जय,ढालू,इन्द्र,राजेश,गुरदास, जयपुर से-कविता- अशोक, तिन, सारिका, सोनिया पुरसानी,मालादेवी टिलवानी,लक्ष्मी-आशा रामवानी,सोनम,कोमल,नितिन घनानी अजमेर से-प्रेम प्रकाशी निर्मला-हीरानन्द, चतुरी -मुरलीधर जेसवानी,विशनी जेसवानी कोटा -प्रेम प्रकाशी मनोज,अनिल,मोहनलाल राजानी, नांगल मौजिया (खैरथल) से-प्रेम प्रकाशी ईश्वरी गाराम राजवानी,राजा,सुनील,चांदनी,कपिल ब्यावर से-प्रेम प्रकाशी क्ष्मी,मनीष,संगीता,लोकेश,मीना,रेखा वासवानी, जोधपुर से-प्रेम प्रकाशी रेनू-ममता दयालदास वमानी,भावना-दीपा बादलानी अहमदाबाद से-प्रेम प्रकाशी रश्मि मनोज कलवानी, गान्धीधाम -प्रेम प्रकाशी जयवन्ती-मोहनदास भगत्यानी,रमेश बूलचंदानी फैजाबाद से-अन्नू लवानी,डाली,विमल,डाली,राधादेवी,नूतन,राहुल,बीना मदान, तिरोड़ा से- कविता, पुष्पा-भगवानदास पानी गोन्दिया से-राहुल,पूजा,राणी,ध्रुव कुमार लधानी, चापा से- प्रेमप्रकाशीवरियलदास.

सद्‌गुरु शान्तिप्रकाश प्रवचन श्रृङ्खला की दो वीडियो सीडी जारी

प्रेमावतार सद्‌गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज के संकलित प्रवचनों की श्रृङ्खला में संख्या ३४ व ३५ को क्रमशः संतनि जो नितु करि सत्संग व चाहें जे पहिंजो भलो शीर्षक के साथ जारी किया गया है. इनका मूल्य प्रति कैसेट २० रु है. जिसे प्रेम प्रकाश आश्रम, उल्हासनगर-५ से प्राप्त किया जा सकता है.

सांई टेऊँराम बाबा की लीलाऐं

चित्रकथा–

चित्रांकन, लेखन– सुधा जौहरी, ज



पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज का आगे का यात्रा कार्यक्रम

10 से 11 मार्च	2006 तक	अलीगढ़	0571-2420591
12 से 22 मार्च	2006 तक	हरिद्वार	01334-260144, 260815
23 मार्च	2006	यात्रा	098290-14850, 094140-67850
24 से 26 मार्च	2006 तक	गांधीधाम	02836-229608
27 से 28 मार्च	2006 तक	राजकोट	098290-14850, 094140-67850
29 मार्च	2006	यात्रा	098290-14850, 094140-67850
30 मार्च	2006	जयपुर	0141-2372424, 2372423

नोट : जयपुर प्रवास के समय मोबाईल बन्द रहेगें

तीज त्यौहार



18 जनवरी	06	बुधवार	–	श्री गणेश चतुर्थी व्रत
21 जनवरी	06	शनिवार	–	वीर हेमूकालाणी बलिदान दिवस
25 जनवरी	06	बुधवार	–	षट्तिला एकादशी व्रत
26 जनवरी	06	गुरुवार	–	गणतंत्र दिवस
29 जनवरी	06	रविवार	–	मोनी अमावस्या
30 जनवरी	06	सोमवार	–	चन्द्रदर्शन
2 फरवरी	06	गुरुवार	–	वैनायकी तिल चतुर्थी
3 फरवरी	06	शुक्रवार	–	बसन्त पंचमी, सरस्वती पूजा
4 फरवरी	06	शनिवार	–	साांई टेऊँराम चौथ
8 फरवरी	06	बुधवार	–	जया एकादशी व्रत
12 फरवरी	06	रविवार	–	व्रत की पूर्णिमा कुम्भ संक्रान्ति
13 फरवरी	06	सोमवार	–	स्नानदान की माघी पूर्णिमा, माघ स्नानपूर्ण
16 फरवरी	06	गुरुवार	–	श्री गणेश चतुर्थी व्रत
24 फरवरी	06	शुक्रवार	–	विजया एकादशी व्रत
26 फरवरी	06	रविवार	–	महाशिवरात्रि पर्व, संत गणेशानन्द जयन्ती
27 फरवरी	06	सोमवार	–	श्राद्ध की अमावस्या
28 फरवरी	06	मंगलवार	–	स्नानदानकी अमावस्या
1 मार्च	06	बुधवार	–	चन्द्रदर्शन

गोन्दिया में तृतीय वार्षिक महोत्सव

2 फरवरी गुरुवार से 6 फरवरी सोमवार 2006 तक

कार्यक्रम

गुरुवार, 2 फरवरी 2006

प्रेमप्रकाश ग्रंथ एवं श्रीमद भागवत गीता के पाठों का आरंभ व हवन पूजन	सुबह 9 बजे से 11 बजे
सत्संग	शाम 5 बजे से 7 बजे

शुक्रवार, 3 फरवरी 2006

सत्संग	सुबह 9 बजे, शाम 5 बजे से 7 बजे

शनिवार 4 फरवरी 2006

सद्गुरु महाराजजी का आगमन, स्वागत शोभा यात्रा	सुबह 9 बजे
स्वागत समारोह	सुबह 11 बजे
सत्संग	शाम 5 बजे से 7 बजे

रविवार 5 फरवरी 2006

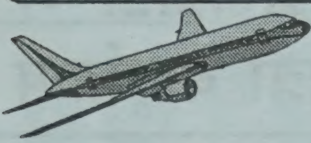
सत्संग	सुबह 9 बजे से 11 बजे तक
सामूहिक जनेऊ संस्कार	दोपहर 12 बजे
सत्संग	शाम 5 बजे से 7 बजे तक

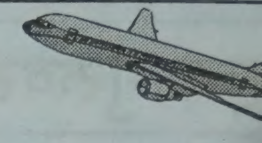
सोमवार 6 फरवरी 2006

प्रातः 9 से 11:30 बजे तक सत्संग, पाठों का भोग, ध्वजावंदन एवं 12 बजे से आम भण्डारा होगा. सायंकाल 5 से 7 बजे तक सत्संग, पल्लव पाकर उत्सव का समापन होगा.

पता :
स्वामी टेऊँराम जनकल्याण ट्रस्ट
सिंधी कॉलोनी, गोंदिया (महाराष्ट्र)
फोन : 234104, 226924

सेवा में :
सन्त हरीशलाल प्रेमप्रकाशी
श्री प्रेम प्रकाश मंडली, गोंदिया.





श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष
पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज का
यात्रा कार्यक्रम





14 से 17 जनवरी	2006	तक	रायपुर	0771-2424681
18 जनवरी	2006		बेमेतरा	098290-14850, 094140-67850
19 से 21 जनवरी	2006	तक	भाटापारा	07726-220779
22 से 23 जनवरी	2006	तक	चापा, कोरबा	098290-14850, 094140-67850
24 जनवरी	2006		बिलासपुर	098290-14850, 094140-67850
25 जनवरी	2006		रायगढ़	098290-14850, 094140-67855
26 से 27 जनवरी	2006	तक	बरगढ़	098290-14850, 06646-234660
28 से 30 जनवरी	2006	तक	धमतरी	098290-14850, 094140-67850
31 जनवरी	2006		भानुप्रतापपुर, दल्लीराजहरा	0771-2424681
1 से 2 फरवरी	2006	तक	दुर्ग, भिलाई	0788-328584, 325208
3 फरवरी	2006		राजनान्दगाँव	098290-14850, 094140-67850
4 से 6 फरवरी	2006	तक	गोन्दिया	07182-234104
7 फरवरी	2006		तिरोड़ा	098290-14850, 094140-67850
8 से 9 फरवरी	2006	तक	बालाघाट	07632-241970
10 से 12 फरवरी	2006	तक	सिवनी	07692-224752
13 फरवरी	2006		भण्डारा	07184-260177
14 फरवरी	2006		अमरावती	0721-2670001
15 फरवरी	2006		अकोला	098231-80241
16 फरवरी प्रातः	2006		यवतमाल	07232-246077
16 से 19 फरवरी	2006	तक	नागपुर, कामठी	0712-2583458
20 फरवरी	2006		यात्रा	098290-14850, 094140-67850
21 से 23 फरवरी	2006	तक	जयपुर	0141-2372423, 2372424
24 से 27 फरवरी	2006	तक	ग्वालियर	0751-2426111
28 से 1 मार्च	2006	तक	डबरा	07524-223245
2 मार्च	2006		झांसी, दतिया	098290-14850, 094140-67850
3 से 5 मार्च	2006	तक	मुरैना	07532-220280
6 मार्च	2006	तक	काला महल, आगरा	0562-2369084
7 मार्च	2006	तक	कमला नगर, आगरा	0562-2882529, 2881736
8 से 9 मार्च	2006	तक	केदार नगर, आगरा	0562-2211499

आगे का कार्यक्रम पेज 27 पर भी देंखे

श्री अमरापुर स्थान प्रेम प्रकाश सन्देश

सन् 2006 | **पर्व-उत्सव-तीज-त्यौहार** | **सम्वत् 2062-63**

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के मुख्य आयोजन

साँई टेऊँरामजी महाराज	साँई सर्वानन्दजी महाराज	साँई शान्तिप्रकाशजी महाराज	साँई हरिदासरामजी महाराज
जयंती 27 जून से 1 जुलाई तक	जयंती 2 से 6 अक्टूबर तक	जयंती 5 से 9 अगस्त तक	जयंती 8 से 12 मई तक
पुण्य तिथि 28 मई से 1 जून तक	पुण्य तिथि 26 से 30 जुलाई तक	पुण्य तिथि 11 अगस्त को	पुण्य तिथि 15 से 19 अगस्त तक

चैत्र मेला, जयपुर	हरिद्वार मेला	साँई शांतिप्रकाश जन्म शताब्दी मेला, जयपुर	साँई बाबा टेऊँराम प्राकट्य दिवस
11 से 15 अप्रेल तक	2 से 6 अक्टूबर तक	5 से 9 अगस्त तक	1 जुलाई शनिवार

चन्द्र दर्शन-2006

1 जनवरी, रविवार
30 जनवरी, सोमवार
1 मार्च, बुधवार
30 मार्च, गुरुवार
29 अप्रेल, शनिवार
28 मई, रविवार
27 जून, मंगलवार
26 जुलाई, बुधवार
25 अगस्त, शुक्रवार
24 सितम्बर, रविवार
24 अक्टूबर, मंगलवार
22 नवम्बर, बुधवार
22 दिसम्बर, शुक्रवार

अमावस-2006

29 जनवरी, रविवार
27 फरवरी, सोमवार
29 मार्च, बुधवार (सूर्यग्रहण)
27 अप्रेल, गुरुवार
27 मई, शनिवार
25 जून, रविवार
25 जुलाई, मंगलवार
23 अगस्त, बुधवार
22 सितम्बर, शुक्रवार
21 अक्टूबर, शनिवार
20 नवम्बर, सोमवार
20 दिसम्बर, बुधवार

सांई टेऊँराम चौथ-2006

5 जनवरी, गुरुवार
3 फरवरी, शुक्रवार
5 मार्च, रविवार
3 अप्रेल, सोमवार
3 मई, बुधवार
1 जून, गुरुवार
1 जुलाई, शनिवार
30 जुलाई, रविवार
29 अगस्त, मंगलवार
28 सितम्बर, गुरुवार
28 अक्टूबर, शनिवार
26 नवम्बर, रविवार
26 दिसम्बर, मंगलवार

एकादशी-2006

10 जनवरी, मंगलवार
25 जनवरी, बुधवार
8 फरवरी, बुधवार
24 फरवरी, शुक्रवार
10 मार्च, शुक्रवार
25 मार्च, शनिवार
9 अप्रेल, रविवार
24 अप्रेल, सोमवार
9 मई, मंगलवार
23 मई, मंगलवार
7 जून, बुधवार
21 जून, बुधवार
7 जुलाई, शुक्रवार
21 जुलाई, शुक्रवार
5 अगस्त, शनिवार
19 अगस्त, शनिवार
4 सितम्बर, सोमवार
18 सितम्बर, सोमवार
3 अक्टूबर, मंगलवार
17 अक्टूबर, मंगलवार
1 नवम्बर, बुधवार
16 नवम्बर, गुरुवार
1 दिसम्बर, शुक्रवार
16 दिसम्बर, शनिवार
30 दिसम्बर, शनिवार

पूर्णिमा-2006

13 जनवरी, शुक्रवार
12 फरवरी, रविवार
14 मार्च, मंगलवार
13 अप्रेल, गुरुवार
13 मई, शनिवार
11 जून, रविवार
11 जुलाई, मंगलवार
9 अगस्त, बुधवार
7 सितम्बर, गुरुवार
6 अक्टूबर, शुक्रवार
5 नवम्बर, रविवार
4 दिसम्बर, सोमवार

डाक रजि. ग्वालियर संभाग - 161/2006-07 (R.M.S. Posting date 15th & 16th) भा.शा. - 29/18/81- II

श्री अमरापुर स्थान प्रेम प्रकाश सन्देश

सन् 2006 पर्व-उत्सव-तीज-त्यौहार सम्वत् 2062-63

14 जनवरी शनिवार- मकर संक्रांति
26 जनवरी गुरुवार- गणतंत्र दिवस
2 फरवरी गुरुवार- बसंत पंचमी, माँ सरस्वती पूजन
26 फरवरी रविवार- महाशिवरात्रि
14 मार्च मंगलवार- होली, होलिका दहन
15 मार्च बुधवार- धुलेण्डी, छारण्डी, धूरियो
30 मार्च गुरुवार- चेटीचण्ड, भगवान झूलेलाल जयंती
6 अप्रेल गुरुवार- श्री दुर्गाअष्टमी, श्री रामनवमी
10 अप्रेल सोमवार- स्वामी गुरुमुखदास वर्सी (जयपुर)
11 से 15 अप्रेल मंगल से शनि- 85वाँ चैत्र मेला (जयपुर)
12 मई शुक्रवार- साँई हरिदासराम जयंती
1 जून गुरुवार- साँई टेऊँराम पुण्य तिथि (निर्वाण दिवस)
1 जुलाई शनि- साँई टेऊँराम बाबा जयंती (प्राकट्योत्सव)
6 जुलाई गुरुवार- साँई टेऊँराम छठी उत्सव (नामकरण उत्सव)
11 जुलाई मंगलवार- गुरु पूर्णिमा- व्यास पूजा
30 जुलाई रवि- साँई सर्वानन्द पुण्यतिथि (निर्वाण दिवस)
1 अगस्त मंगल-साँई सर्वानन्द जलसमाधि दिवस(हरिद्वार)
9 अगस्त बुधवार- रक्षा बंधन, साँई शान्तिप्रकाश जयंती-जन्म शती समारोह शुरू, नारियल श्रावण पूर्णिमा
11 अगस्त शुक्रवार- सद्गुरु शांतिप्रकाश पुण्यतिथि
15 अगस्त मंगलवार- स्वतंत्रता दिवस
16 अगस्त बुधवार- श्री कृष्ण जन्माटमी
19 अगस्त शनिवार- साँई हरिदासराम पुण्यतिथि (निर्वाण दिवस)
26 अग.शनि- साँई हरिदासराम जलसमाधि दिवस(हरिद्वार)
23 सितम्बर शनिवार- नवरात्रा स्थापना, नवरात्रा शुरू
28 सितम्बर गुरुवार- नवरात्रा छठ मेला
30 सितम्बर शनिवार- श्री दुर्गाष्टमी
1 अक्टूबर रविवार- श्री दुर्गानवमी
2 अक्टूबर सोमवार- श्री विजयादशमी, श्री गांधी जयंती
2 से 6 अक्टूबर सोम से शुक्र- साँई सर्वानन्द जयंती महोत्सव
21 अक्टूबर शनिवार- दीपावली, माँ लक्ष्मी पूजन
22 अक्टूबर रविवार- गोवर्धन पूजा
23 अक्टूबर सोमवार- भाईदूज, चन्द्रदर्शन, श्री अमरापुर धाम में कार्तिकोत्सव शुरू
30 अक्टूबर सोमवार- गोपष्टमी महोत्सव, गौपूजन
31 अक्टूबर मंगलवार- अक्षय नवमी, आँवला वृक्ष पूजन
2 नवम्बर गुरुवार- देवोत्थान हरि प्रबोधिनी एकादशी
5 नवम्बर रविवार- कार्तिक पूर्णिमा, गुरुनानक जयंती

सूर्यग्रहण: 29 मार्च बुधवार, स्पर्श सायं 4:47 मोक्ष सायं 5:56.
चन्द्रग्रहण: 7 सितम्बर गुरुवार, स्पर्श अर्द्धरात्रि 11:34 मोक्ष रात्रि 1:08 पर.

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के लिये श्रीचंद पंजवानी द्वारा प्रेम प्रकाश कार्यालय से सज्जाकर रवि ऑफसेट, निम्बालकर की गोठ नं.2, से मुद्रित करवाकर कार्यालयः स्वामी सर्वानन्द सेवा समिति, प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ, लश्कर, ग्वालियर से प्रकाशित किया गया.
फैक्स नम्बर- 0751-4045144 (कार्यालय फोन सांय 4 से 8 - 0751-4045144)
सम्पादक : शंकरलाल सबनानी, फोन : 0751-2327427, श्रीचंद पंजवानी, फोन : 0751-2454183

सूचना

समस्त सम्माननीय सदस्यों के सूचनार्थ उनके प्रेषण पते के ऊपर सदस्यता क्रमांक रसीद संख्या व शुल्क अवधि लिखी हुई है, शुल्क अवधि समाप्त होने की सूचना भी आपके पते के ऊपर LAST COPY लिखकर उसे Highlight करके दर्शायी गई है. पत्रिका की निरंतर प्राप्ति के लिये अपनी सदस्यता का नवीनीकरण सदस्यों को यथाशीघ्र करा लेना चाहिए.

- व्यवस्थापक

सदस्यता क्रमांक

श्रीमान्